kissekahani.com

बुढ़िया ने टांड से एक छोटा-सा संदूक उतारकर उसमें से एक थैली निकाली

हवा भीतर न आए, सो दरवाजा बंद रखता। चल्हा पोत देता। कभी कभी अपने और बुढ़िया-के कपड़े भी सज्जीसे धो देता। मजेसे बासी रोटियां खाता और खटियापर पड़ रहता।

सेवाराम संतुष्ट था। मगर एक दिन बिल्ली फिर बोली :

"अरी बुढ़िया दादी, मेहनती आदमियोंका काम कहीं सात-आठ रोटियोंसे चलता है! कितनी पतली पतली तो तेरी रोटियां होती हैं। उसपर भी बासी। अरी, कमसे कम दस-बारह रोटियां खिला। बासी क्यों रखती है? यही रोज गरम गरम पका दिया करेगा।"

बुढ़ियाने चौंककर बिल्लीकी ओर देखा। फिर सेवारामकी ओर देखा। वह मजेसे बासी रोटियां खा रहा था।

"मेरी मिनको म्याऊं," बुढ़िया बिल्लीको लाड़ दिखाकर बोली, "इससे तो बड़ा खरच बढ़ जाएगा!"

"उंह!" बिल्लीकी तरफसे आवाज आई, "इतनी कंजूसी! मैं जानती हूं तेरे पास खूब पैसा है। इस सेवारामकी जितनी सेवा करेगी, उतनी ही मेवा मिलेगी। मैं भी तो रोज रोज बासी रोटियां खाते खाते तंग आ गई हूं। यह तो होता नहीं कि एकाध दिन हलुआ-खीर कुछ बने और मैं खाऊं!" इसके बाद बिल्ली बोली, "म्याऊं, म्याऊं!"

एक दिन सेवाराम पूनियां लेने बाजार गया था। बुढ़ियाने एक छोटा-सा संदूक टांडसे उतारा। उसमें से एक फटी-पुरानी-सी थैली निकाली। उसमें से एक नई-नकोर थैली निकली। उसमें से कुछ चांदीके पुराने रुपए निकाले—रानी विक्टोरियावाले। लेकिन जब वह सारी थैली-थैली संगवाकर संदूक बंद करने लगी, तो उसने कुछ आहट सुनी। उसने चौंककर दरवाजे-की तरफ देखा। सेवाराम दरवाजेके बीचोंबीच खड़ा उसीकी तरफ देख रहा था। यह देखकर टिमको उछल गई।

"मैं जूते पहनना भूल गया था," सेवारामने कहा।

बुढ़ियाने जल्दीसे संदूक बंद करके पीछे-को खिसका दिया और बोली, "तो जल्दीसे जूते पहनकर जा। फिर बहुत देर हो जाएगी।"

बिल्लीने उसी समय कहा, "बुढ़िया दादी, सेवारामको कुछ और पैसे दो। जब यह पूनियां

लेकर आएगा, तो थोड़ा-सा दूध, सूजी, मीठा, चावल वगैरा लेता आएगा। आखिर हलुआ और खीर बननी है कि नहीं?"

"देख, मिनको,तू बीचमें मत बोल," बुढ़ियाने बिल्लीकी तरफ उंगली उठाकर कहा। "मैं उस खूसट बनियेसे ये सब चीजें सस्ती ला सकती हूं। वह बहुत डंडी मारता है।"

"सेवारामके सामने उसकी हिम्मत नहीं पड़ेगी डंडी मारनेकी। यह बहुत अच्छी खरीदारी करता है। यह पंसारीके यहांसे काजू-किशमिश-मूंगफली जैसी बहुत-सी ऐसी चीजें भी तो लाएगा, जो तुझे ध्यान भी नहीं रहेंगी। इसे कमसे कम दो चांदीके रुपए दे दे!"

अब हुआ यह कि सेवाराम सचमुच बहुत बढ़िया खरीदार साबित हुआ। खीर और हलुएके लिए जो जो चीजें वह लाया, वे सब ताजी थीं। उनमें कोई कीड़ा भी नहीं रेंगता था।

"उन रुपयोंमें से कुछ बचा कि नहीं?" बुढ़ियाने सेवारामसे पूछा, "कि सारे खर्च कर आया?"

"पैसा खर्च नहीं करेगी, तो क्या पेटमें धरेगी?" बिल्ली अपनी गद्दीके ऊपर बैठी बैठी बोली। "क्या तू रोटीकी जगह पैसा खाकर दिखा सकती है, बुढ़िया दादी?"

"ना," बुढ़िया दादीने उत्तर दिया।

"क्या तू पैसेको ओढ़-बिछा सकती है?" बिल्लीने पूछा।

"ना," बुढ़िया टिमको बोली।

"क्या तू अंगीठीमें कोयलेकी जगह चांदीके रुपये जला सकती है?" मिनको बिल्ली बोली।

"ना ना," आश्चर्यसे टिमकोने उत्तर दिया।

मिनको बिल्लीने अपनी आंखें बंद कर लीं। फिर बोली, "तो रुपये क्या शहद लगाकर चाटेगी? अरी बुढ़िया दादी, जितनी जल्दी ऐसे निकम्मे रुपयोंसे पिंड छूटे उतना ही अच्छा!"

टिमको बुढ़ियाके चेहरेपर थोड़ी-सी रौनक आई। उसने कहा, "हां, यह बात तो सही है। मैंने इस बातको इस ढंगसे कभी सोचा भी न था। तू ही ठीक कहती है, मिनको। और, सेवाराम, इतना अच्छा सामान तू ले आया है कि इससे बहुत बढ़िया खीर और हलुआ बनेगा।"

सेवारामने सिर हिलाया। फिर वह चूल्हेके लिए थोड़ी-सी लकड़ियां चुननेके वास्ते जंगलमें चला गया। पीछे बुढ़ियाने टांडसे संदूक खींचकर फिर वही फटी-पुरानी और नई-नकोर थैलियां निकालीं। विक्टोरियाके रुपयोंको फिरसे गिना। वह बिल्लीसे बोली:

"मिनको रानी, जरा देख तो—एक छोटा-मोटा खजाना ही तो इकट्ठा हो गया है मेरे पास। भला, फिरसे तो बता कि मैं इसे एकदम बेकार कैसे मान लूं?"

लेकिन मिनको चुप रही। वह टिमको बुढ़ियाकी इस बेहूदी बातपर कोई टीका-टिप्पणी करना नहीं चाहती थी।

एक दिन सेवाराम सूतकी चींचलियां बेचनेके लिए बाजार गया हुआ था। बुढ़ियाने चूल्हेपर दाल चढ़ा रखी थी। वह लकड़ियोंमें फूंक मार रही थी। तभी उसके दरवाजेपर एक आदमी आया। वह खच्चरपर सवार था। उससे उतरकर उसने भीतर झांका और खच्चरकी लगाम बाहरके कुंडेसे अटकाकर घरमें घुसा। बुढ़ियाने उसे देखकर अनुमान लगाया कि वह कोई अच्छा खाता-पीता किसान है। उसने ऊनका स्वेटर पहन रखा था। एक गरम टोपा भी उलटकर पहन रखा था। उसका फुंदना भी सेवारामके टोपेके फुंदनेकी तरह लाल था। कमरमें उसने धोतीका फेंटा कुरतेके नीचे कस रखा था। बहुत कुछ तो वह सेवाराम जैसा ही लगता था।

उसने कहा, "बुढ़िया मां, भला यहां कोई सेवाराम नामका आदमी काम करता है क्या?"

"हां हां, क्यों नहीं करता? करता है," बुढ़िया ने कहा, "बहुत अच्छा काम करता है।"

अजनबी थोड़ा सकुचाया। वह कुछ कुलमुला कर बोला, "यह तो ठीक है। भारतमें बहुतसे सेवाराम काम करते हैं। दुनिया सेवारामोंसे पटी पड़ी है। क्या यह सेवाराम मेरी तरह ही लाल फुंदने वाला टोपा पहनता है?"

"हां, पहनता है," बुढ़ियाने सिर हिलाया।

"ओह!" अजनबी थोड़ा सिर खुजाता हुआ बोला, "बहुतसे लोग ऐसे काले टोपे पहनते हैं और उनके नाम भी सेवाराम होते हैं। भला, उसकी मूंछें झाड़ू की सींकोंकी तरह लगती हैं ना?"

"हां, लगती तो हैं," बुढ़ियाने हाथका काम

रोककर उत्तर दिया।

"ठीक है, ठीक है," इस बार सिर खुजानेके लिए किसानने अपना टोपा ही सिरसे उतार डाला। "पर बहुतसे सेवारामोंकी मूंछें झाड़ू की तरह होती हैं। भला, वह अपनी आवाज भी फेंक सकता है क्या?"

"आवाज फेंक सकता है!" बुढ़िया चकरा कर बोली, "भला यह कौन-सा जादू होता है?"

"अरे, बुढ़िया दादी, तू इतनी बड़ी हो गई

"यकीन नहीं आता, तो मिनको से पूछ देख!"

और तूने ऐसे लोगोंके बारेमें नहीं सुना, जो अपनी आवाज फेंक सकते हैं? यह तो ठीक है कि ऐसे आदमी लाखोंमें एक मिलते हैं—पर मिलते जरूर हैं। वे जब अपनी आवाज पेड़ोंके पीछे फेंकते हैं, तो वे चुपचाप खड़े दिखाई देते हैं और पेड़ बोलता-सा लगता है। जब वे अपनी आवाज किसी संदूकमें फेंकते हैं या छतके ऊपर फेंकते हैं, तो लगता है कि संदूक और छतपर भूत बोल रहे हैं—समझी, बुढ़िया माई?"

"हे भगवान!" बुढ़िया चकराती हुई बोली, "मेरी अक्कलमें तो कुछ नहीं आया। मैं भला ऐसे जादूगरको अपने घरमें कैसे जगह दे सकती हूं? अरे, वह तो किसी भूतिया-मसानका चेला होगा, जो भांति भांतिकी शकलें बदल लेते हैं।"

किसान खूब जी खोलकर हंसा। वह बोला, "बुढ़िया माई, जिस सेवारामको मैं पूछ रहा हूं, वह तो ऐसे दो भूतिया-मसानोंको कुत्तोंकी तरह जंजीरसे बांधकर लिये लिये फिरे—ऐसा है वह। इसी लिए तो मैं उसे ढूंढ़ता फिर रहा हूं। रबीकी फसल कटनेका मौसम है। वह मिल जाए, तो गांवके कई खेतोंकी कटाई चटाक-पटाक हो जाए। जानती है न, चोर-लुटेरे बहुत-सा अनाज हमारे गांवके खलिहानों-खेतोंसे चुराकर ले जाते हैं। सेवाराम मिल जाए, तो यह खतरा टल जाए। नहीं तो हमारी रातोंकी नींद हराम होगी।"

तभी कस्बेकी तरफसे सेवाराम गाता हुआ आता दिखाई दिया। उस किसानने उसकी ओर मुंह करके पुकारा: "अरे, सेवाराम है क्या?"

"होय!" सेवारामने दूरसे ही हाथ उठाकर जवाब दिया और इस तरफ भागना शुरू कर दिया किसान भी उसकी ओर भागा।

"अरे, तू कहां था?" — "मैं तो तुझे ढूंढ़ता ही रह गया, बावले!" आदि आदि बातें कहकर दोनों एक-दूसरेसे भेंट-मिलाई करते रहे। बुढ़िया अपने माथेपर बल डालती हुई घरके भीतर लौटी और चरखेपर बैठ कर चर्रखचूं चर्रखचूं करने लगी। आखिरकार उसने चरखा रोका और सामने गद्दीपर बैठी मिनकोसे बोली, "मिनको, मेरा तो दिमाग ही खराब हो गया है। कुछ समझमें ही नहीं आता। यह भूतिया-मसान वाला मामला क्या है? तेरी समझमें कुछ आता है?"

मिनको न कुछ बोलने वाली थी, न बोली।

"अरी मिनको रानी, कुछ तो बोल, मेरी बिल्लो। क्या सेवारामको हम रखे रहें? अगर मेरे संदूक या छतसे आवाजें आने लगीं, तो क्या होगा, बिल्लोरानी?"

बिल्लोरानी कुछ नहीं बोली—कुछ भी नहीं।

"अच्छा, चल, यही बता कि भूतिया-मसान-से तो उसका कोई मेल-जोल नहीं है?"

मिनको इसपर भी कुछ नहीं बोली। गुस्सा

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

kissekahani.com

कहानी

एक और इम्तहान

• मनहरचौहान

राजेश तूफानकी तरह उस टूटे-फूटे मकानमें दाखिल हुआ और चिल्लाया, "मां! मां! मैं पास हो गया! मैं अव्वल आया हूं, मां!"

"ओह! मेरे बेटे!" कहती हुई राजेशकी मां रसोईघरसे निकल आई। उसने अपने लाड़ले बेटेको गलेसे लगा लिया।

राजेश हमेशा पहला नंबर ही आता था। आज उसने चौथा दर्जा पास कर लिया था। वह गरीब मां-बापका लड़का था। स्कूलकी ओरसे उसकी फीस माफ कर दी गई थी। फीस तो माफ हो गई थी, लेकिन बसमें स्कूल आने-जाने, स्कूलकी पोशाक वगैरहके भी तो खर्चे होते हैं न! राजेश एक प्राइवेट स्कूलमें पढ़ता था, जहां पोशाक वगैरहपर बड़ा ध्यान दिया जाता था। उस स्कूलमें पढ़ाई भी बहुत अच्छी होती थी, अतः राजेशके पिताजीने अपना पेट काटकर उसे वहीं भरती करवाया था।

राजेशके पिताजी किसी सेठके यहां मुनीमकी नौकरी करते थे। काफी पुरानी नौकरी थी, लेकिन उन्हें तनख्वाह ज्यादा नहीं मिलती थी। महंगाई दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी, लेकिन तनख्वाह ज्यों-की-त्यों थी। वे लोग घर-गिरस्तीके खर्चोंमें ज्यादा-से-ज्यादा कटौती करते, फिर भी गाड़ी बड़ी मुश्किलसे चलती। कभी कभी तो वह रुक ही जाती।

राजेशकी बहुत इच्छा थी कि वह भी कोई काम करे। दो, चार, दस रुपए—जो भी बन पड़े, कमाए और अपने पिताकी सहायता करे। राजेश अपने पिताका भी उतना ही लाड़ला था, जितना मांका। वे नहीं चाहते थे कि उनका लाड़ला बेटा इतनी कच्ची उम्रमें ही काम-धाम शुरू कर दे। इसी लिए राजेश अभी तक मन मसोसकर बैठा हुआ था।

उसने कहा, "मां, पांचवें दर्जेसे तो मेरी पोशाक वगैरहके खर्चे और बढ़ जाएंगे। मुझे टाई लगानी पड़ेगी, बूट पहनने होंगे। बूटपर रोज पालिश भी करनी होगी।"

मांने हुलस कर फिरसे उसे गलेसे लगा लिया। उसकी आंखें भर आईं, "तुझे अभीसे फिक्र होने लगी, मेरे लाल!"

"हां, मां. . . और मैं चाहता हूं कि . . ." वह हिचक गया।

"क्या, बेटे?"

"अब मुझे मत रोकना। मैं कहीं कोई छोटा-मोटा काम कर लूंगा।"

"आजकल ऐसा काम भी कहां मिलता है!"

"मैंने एक अखबारवालेसे बात कर ली है," राजेशने पहली बार अपनी मांको बताया। "सुबह-शाम मैं उसके अखबार बांट आया करूंगा। हर महीन वह मुझे दस रुपए देगा।"

"लेकिन, बेटा, इसमें रोज तेरे कई घंटे बरबाद हो जाएंगे। तुझे लिखने-पढ़नेके लिए पर्याप्त समय नहीं मिलेगा। फिर तू हर साल अपनी कक्षामें अव्वल कैसे आएगा?"

सुनकर राजेश भी सोचमें पड़ गया। कुछ देर तक वह खामोशीसे मांकी ओर देखता रहा। फिर उसकी आंखोंमें चमक आ गई। वह बोला, "मां, मैं रातको देर तक जागा करूंगा। हर रात जागूंगा और पढ़ूंगा। देख लेना, मैं काम भी करूंगा और अव्वल भी आऊंगा।"

मांने टालनेके लिए कह दिया, "तेरे पिताजी रातको आएंगे, तब उनसे बात करके देखना।"

"अच्छा, मां," राजेशने कहा और खेलने चला गया।

वह खेलकर लौटा तब उसके पिताजी घर वापस आ चुके थे। मां उन्हें समाचार दे चुकी थी कि हमारा बेटा इस बार भी अव्वल आया है। हिन्दी, अंग्रेजी और गणितमें तो उसे बहुत ही अच्छे नंबर मिले हैं। पिताजीने राजेशको प्यारसे अपनी गोदमें बिठा लिया। मौका देखकर राजेशने वही अखबार बांटने वाली बात छेड़ी। सुनकर पिताजी गंभीर हो गए और कुछ न बोले।

"क्यों, पिताजी, आप मना तो नहीं करेंगे?" राजेशने उनकी आंखोंमें देखते हुए पूछा।

जवाब क्या दें, इस बारेमें पिताजी अभी सोच ही रहे थे कि एक अनजान आदमी घरमें दाखिल हुआ। पिताजी उसके नमस्कारका जवाब देते हुए, अभिवादनमें उठ खड़े हुए और बोले, "कहिए?"

उस आदमीको इससे पहले किसीने नहीं देखा था। राजेशकी मां भी कौतूहलसे वहां आ खड़ी हुई। राजेशकी आंखें तो उस आदमीके चेहरेपर लगी हुई थीं ही।

आदमी आगे बढ़ा। उसने राजेशको बांहोंमें ले लिया और बहुत ही प्यारसे कहा, "तुम्हीं हो न राजेश वर्मा?"

"जी हां, यह मेरा बेटा है, लेकिन..." राजेशके पिताजी आगे आते हुए बोले, "...लेकिन आप कौन हैं?"

"मेरा नाम लाला हरबंसलाल है," आदमी मुस्कराता हुआ बोला। "शायद आपने मेरा नाम सुना हो... अखबारोंमें वह विज्ञापन निकलता है न वैद्यराज लाला हरबंसलालका?"

"जी हां, जी हां..."

"वह मैं ही हूं।"

"ओह! धन्य भाग हमारे! कहिए, कैसे आना हुआ इस गरीबकी कुटियामें?" राजेशके पिता तो जैसे पानी पानी हो गए। लाला हरबंसलालका नाम सचमुच बहुत ऊंचा था। उनसे इलाज करवानेके लिए लोग दूर दूरसे आते थे और मुंह-मांगी फीस देते थे। लाला हरबंसलाल मुस्करा उठे और बोले, "मेरा बेटा राजेशके साथ ही पढ़ता है। उसीने बताया कि राजेश कक्षामें अव्वल आया है। इसी साल नहीं, बल्कि वह हर साल अव्वल आता है।"

अपनी प्रशंसा सुनकर राजेश झेंपकर नीचे देखने लगा। राजेशके पिताजीकी छाती गज भर फूल आई। "हां," उन्होंने कहा, "मुझे अपने बेटे पर नाज है! आप बैठिए न!" लाला हरबंसलाल कुरसीपर बैठ गए।

"मैंने सोचा, क्यों न राजेशके घर हो आया जाए . . ." लाला हरबंसलाल अपनी उसी मुसकानके साथ बोले।

"ओह! आपने सचमुच बहुत कृपा की। राजेशकी मां, जरा लालाजीके लिए शरबत तो बनाना।" राजेशके पिता बोले। मां रसोईघरमें चली गई। राजेश भी उसके साथ जाने लगा, लेकिन लाला हरबंसलालने उसे रोक लिया और अपने पास ही बुलाकर बिठा लिया। उसके माथेपर स्नेहसे हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, "मेरा बेटा यह भी कह रहा था कि आप लोगोंको . . . रुपयों-पैसोंके मामलेमें हमेशा दिक्कत रहती है।"

राजेशके पिताको शर्म-सी महसूस हुई। वह समझ न पाए कि लाला हरबंसलालने एकाएक यह जिक्र कैसे छेड़ दिया। वह चुप रहे। लालाजी आगे बोले, "देखिए, मेरी बातका कोई और मतलब न निकालिएगा... लेकिन मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपके बेटेकी पढ़ाई-लिखाईका पूरा खर्च अपने जिम्मे ले लूं।"

"क्या कह रहे हैं, लालाजी," राजेशके पिताको अपने कानोंपर यकीन ही न हुआ।

"सच कह रहा हूं," लाला हरबंसलालकी मुस्कान उसी तरह कायम थी, "मैं न केवल राजेशकी पढ़ाई-लिखाईका खर्च उठाऊंगा, बल्कि उसे हर महीने पचास रुपए भी दूंगा।"

"ओह! लेकिन . . . लेकिन . . ."

"आप व्यर्थ ही संकोच कर रहे हैं, वर्माजी," लालाजीने राजेशके पिताकी आंखोंमें सीधे देखते हुए कहा। "मुझे ईश्वरने इतना-कुछ दिया है... मुझे कोई अंतर नहीं आएगा। राजेश जैसे मेधावी लड़केकी सहायता करके मुझे खुशी ही होगी।"

तब तक राजेशकी मां शरबत लेकर वहां आ चुकी थी। लालाजीने अपना प्रस्ताव नए सिरेसे राजेशकी मांके सामने रखा, तो वह भी सहसा अपने कानोंपर विश्वास न कर सकी।

राजेशके पिताजीसे न रहा गया। उन्होंने पूछ ही लिया: "लेकिन आप हर महीने राजेशको जो देंगे, उसके बदलेमें राजेशको आपकी क्या सेवाएं करनी होंगी, यह भी बता दीजिए। बिल्कुल मुफ्त तो हम कुछ लेनेके नहीं।"

"ओह! आपका संकोच मुझे भी संकोचमें डाल रहा है," लालाजीने कहा। "लेकिन असलियत यह है कि आपके इस संकोचका अनुमान मैंने पहलेसे ही लगा लिया था। और मैंने उसका इलाज भी सोच लिया है।"

"क्या?"

"आपको मालूम होगा, मैंने एक चूर्ण बनाया है, जिसके खानेसे याददाश्त बढ़ती है। मैं उसके प्रचारका एक नया तरीका अपनाना चाहता हूं। इसमें मुझे राजेशकी सहायता चाहिए।"

"मैं तैयार हूं," राजेश तत्काल बोल उठा। "कहिए, मुझसे कैसी सहायता चाहिए?"

"तुम मुझे लिख कर दो कि तुम याददाश्त बढ़ाने वाला मेरा चूर्ण खाया करते हो," लालाजीने अपनी असली बात अब सामने रखी। "मैं तुम्हारे फोटोके साथ छापूंगा कि जो भी विद्यार्थी इस चूर्णका सेवन करेगा, उसकी याददाश्त राजेश वर्मा जैसी तेज हो जाएगी।"

राजेशको एकाएक समझमें न आया कि क्या कहे। न उसके मां-बाप ही कुछ कह पाए। उनके पशोपेशको लालाजीने तुरंत समझ लिया। वह उठ खड़े हुए और बोले, "आप लोग सोच लीजिए। सोचनेका पूरा वक्त मैं दे रहा हूं। दस-बारह दिनोंमें जब भी आप चाहें, मेरी कोठीपर आकर मिलें।"

राजेशकी पीठ एक बार और थपथपाकर

लालाजी बाहर चले गए।

राजेशने आंखोंमें सवाल लिये हुए मांकी ओर देखा, फिर पिताकी ओर।

"बेटे, क्या सोचते हो तुम?" पिताने राजेशकी ही राय पहले जाननी चाही। मांकी सवालिया आंखें भी राजेशपर आ टिकीं।

सहसा राजेशका चेहरा तमतमा आया। वह बोला, "पिताजी, कैसी विचित्र बात है! क्या चूर्ण खानेसे किसीका दिमाग बढ़ सकता है? तब तो सबने चूर्ण ले-लेकर मेरे जितने नंबर पा लिये होते?"

"बेटे, नंबर तो मिलते हैं मेहनतसे, पढ़ाईसे," मांने कहा।

"फिर मैं कैसे लिखकर दे सकता हूं कि मैं चूर्ण खाता हूं? इसका मतलब तो यह हुआ कि दिमाग बिका करते हैं और कोई भी बाजारमें जा कर उन्हें खरीद सकता है, होशियार बन सकता है। नहीं नहीं, मैं इस तरह अपने ईमानको नहीं बेच सकता!" राजेशकी आवाजमें जोश था, "मैं अभी जाता हूं लालाजीके पास...!"

और राजेश दौड़कर घरसे बाहर निकल गया। लालाजी पैदल ही जा रहे थे, अतः ज्यादा दूर नहीं जा पाए थे। राजेश हांफता हुआ उनके पास पहुंचा और बोला, "लालाजी, मुझे . . . मुझे आपकी बात मंजूर नहीं है, कतई नहीं।

और तुरंत ही लालाजीने राजेशको गोदमें उठा लिया, "शाबाश, बेटे! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।"

"क्या?" राजेशको यकीन ही न हुआ।

लाला हरबंसलाल मुसकराते हुए बोले, "हां, राजेश बेटे, मैं तो तेरा इम्तहान ले रहा था। तू अपने स्कूलके इम्तहानमें ही नहीं, मेरे इम्तहानमें भी शानदार ढंगसे पास हो गया है। अगर तूने मेरी बात मान ली होती, तो मैं तुझे एक पाई भी न देता। लेकिन बात न मानकर तूने बड़े ही आदर्शका काम किया है। अब तुझे अपनी पढ़ाइ-लिखाईमें कोई दिक्कत नहीं होगी। तेरा सारा जिम्मा अब मैं ले रहा हूं, समझे? बदलेमें तू रोज मेरे लड़केको पढ़ा दिया करना।"

राजेश मछलीकी तरह तड़पकर लाला हरबंसलालकी गोदसे उतर गया और खुशीसे चिल्लाता हुआ अपने घरकी ओर भागा। वह इस सुखद समाचारको जल्दी-से-जल्दी अपने मां-बाप तक पहुंचाना चाहता था।

लाला हरबंसलाल भी हंसते हुए, राजेशके ही घरकी दिशामें बड़े बड़े डग भर रहे थे। ●

के १०३, कीर्तिनगर,
नई दिल्ली–१५

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"अरे, मम्मीने बाएं गालपर चांटा मार दिया, तो क्या हो गया; बायां भी आगे कर देते! सुनी नहीं बापूकी बातो?"

"मगर वह चांटा होता, तभी तो बायां आगे करता! वह तो दीवालीका एटम बम या एटम बम! मालूम है?"

पेटूमल

लगी कांपने पूड़ी थरथर,
लड्डू भी घबराए;
पड़े थाल में दही-बड़े तो
'हाय हाय' चिल्लाए!

लगे सिकुड़ने पापड़ भय से,
बरफी चक्कर खाए!
पेट रौलते, जीभ चलाते,
पेटूमल जब आए!

—पंकज गोस्वामी

kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें बड़ी सावधानी बरती जाती है। क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

बिल्ली-मार

सिर पर हैट, आंख पर चश्मा,
मुंह में दबा सिगार;
मूषक दादा गए देखने,
पिक्चर 'बिल्ली - मार'!

लेकिन जब पर्दे पर आया,
बिल्लोजी का सीन,
मूषक दादा हुए वहां से,
तुरत एक-दो-तीन!

—रवींद्र शलभ

ले आया हूं फैन

गीदड़ बोला, "अरे आजकल
ऐसा मौसम आया,
कपड़ा नहीं सुहाता मुझको,
तपती रहती काया!

छल छल बहता सदा पसीना,
पड़ता तनिक न चैन;
परेशान होकर आखिर मैं
ले आया हूं फैन!"

—निर्मला

बंदर की दूकान

कहा बंदरिया ने बंदर से,
"ले लो एक मकान;
छोटी-सी दूकान खोलना,
और बेचना पान!"

बोला बंदर, "सुनो, कभी तो
होगा अपना राज,
घर बैठे आराम मिलेगा,
एक पंथ दो काज!"

—अशोकरंजन सक्सेना

घोड़े की नीलामी

मेले से लेकर आए थे,
घोड़ा लल्लू सेठ;
समझ रहे थे अरबी होगा,
निकला देसी ठेठ!

चले तुरत बाजार उसे ले,
छोड़छाड़ सब काम;
वहीं एक-दो-तीन बोलकर,
कर डाला नीलाम!

—मंगलराम मिश्र

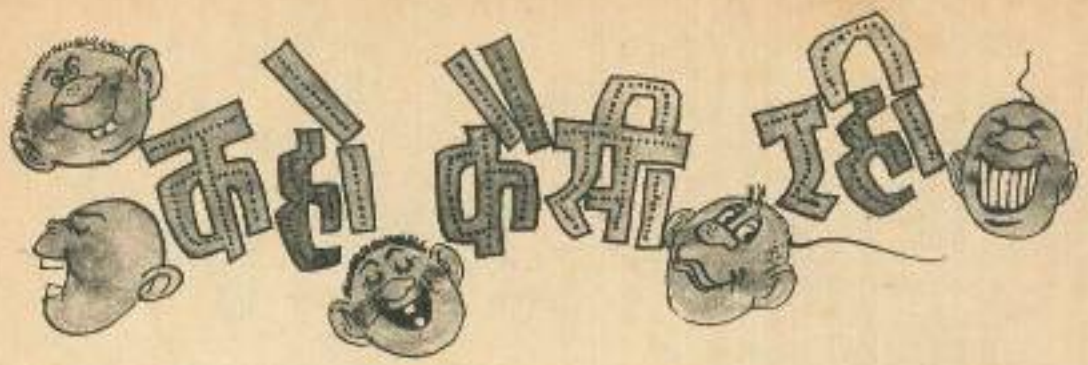

"पिताजी, रातको मुझे सपना आया कि आपने मुझे मिठाई खानेको पांच रुपये दिए। कितना अच्छा हो कि आप सपनेकी मधुरता न तोड़ें।"

"मैं कहां तुमसे रुपये वापस मांग रहा हूं!"

•

अध्यापक: "राम, तुम कक्षामें नहीं सो सकते।"

राम: "सो सकता हूं, सर। अगर आप जोरसे न पढ़ाएं!"

•

एक अभिनेतासे एक निर्माताने बताया कि अबकी बारके सीनमें उसे शेरको गले लगाना है।

"यह मुझसे नहीं होगा।"

"तुम डरो मत, शेरको दूध पर पाला गया है।

"दूध पर तो मैं भी पला था, पर अब मांस खाने लगा हूं।"

एक नेताने सभामें भाषण देते हुए कहा कि हमार देशमें जो काम चपरासी करते हैं, विदेशोंमें वही काम अफसर लोग करते हैं। यह शर्मकी बात है।

"किसके लिए? हमारे लिए या विदेशोंके लिए?" एक श्रोताने पूछा।

•

पार्क में पड़े एक कचरेके डिब्बे पर लिखा था—इसमें कचरा न डालने पर ५० रुपये

जुर्माना किया जाएगा।

•

"तुम्हें जेल क्यों आना पड़ा?"

"जी, भूलसे घटनास्थल पर मेरा विजिटिंग कार्ड रह गया था!"

•

अध्यापक: "क्या बात है, मुन्ने, आज तो तुम सारे सवाल ठीक करके लाए हो।"

"जी, पिताजी कल दौरेसे लौट आए हैं!"

अध्यापक : "क्यों, रमेश, प्रश्न नहीं आता?"
रमेश : "जी नहीं, उत्तर नहीं आता।"

•

एक पार्कका निरीक्षण करते हुए एक अधिकारी ने कहा "तुम क्या सफाई देखते हो? सारे पार्कमें कागज बिखरे पड़े हैं।"

"सर, कल बोर्डकी ओरसे सफाई की अपील बांटी गई थी। वे ही कागज हैं!"

•

किसी गांवसे होकर एक शेर जा रहा था। एकाएक एक घरकी खिड़कीसे आवाज सुनाई पड़ी: "मुन्ने, चुप हो जा अगर तूने रोना बंद नहीं किया तो तुझे शेरके आगे डाल दूंगा।"

शेर बहुत खुश हुआ और यह सोचकर वहीं बैठ गया कि अभी बच्चा उसके सामने डाल दिया जाएगा।

मुन्ना चुप हो गया तो फिर सुनाई पड़ा—"शाबाश, मुन्ना तो राजा बेटा है। शेर आया तो उसकी गर्दन उड़ा दूंगा।"

शेर घबड़ाकर उठ बैठा और यह कहकर चल दिया– "अरे! मनुष्यका कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। कभी कुछ, तो कभी कुछ!"

•

ठेकेदार एक मजदूरको डांटते हुए बोला, "तुम्हें कितनी ही बार कहा है काम करते समय गाना मत गाया कर।"

"जी, मैं काम रोककर ही गाता हूं।"

•

सेठने अपने सबसे छोटे लड़केसे पूछा—"मान लो, एक गरीब आदमीने विश्वास करके सुरक्षाके लिए तुम्हारे पास सौ रुपये जमा कराए और वह मर गया। तब तुम क्या करोगे?

लड़का—"ईश्वरसे प्रार्थना करूंगा कि ऐसे आदमी हमेशा भेजता रहे!"

•

एक शराबी नशेकी झोंकमें कब्र खोदने लगा। खोदते खोदते कब्र इतनी गहरी खोद ली कि बिना मददके बाहर निकलना कठिन हो गया। सर्दीका मौसम था सो ठंड भी लगने लगी। उसने अपने शराबी साथीसे कहा, "यार, बाहर निकाल। मुझे ठंड लग रही है।"

साथी बोला, "ठंड तो लगेगी ही। तेरे शरीर पर मिट्टी जो नहीं पड़ी अभी!"

•

"जब तुम अपनी मां जितनी बड़ी हो जाओगी, तो क्या करोगी?" अध्यापिकाने पूछा।

छात्रा : "सारा दिन खाती रहूंगी, सोती रहूंगी, फिर डाक्टरसे पतले होनेका नुस्खा पूछूंगी!"

जज—"तो तुमने अपने साथीके सिरमें इतने जोरसे लकड़ी मारी कि वह टूट गई?"

अपराधी—"हुजूर, मेरा यह कतई इरादा न था।"

जज— "यानी तुम्हारी नीयत हमला करनेकी नहीं थी?"

अपराधी— "मेरी नीयत लाठी तोड़नेकी नहीं थी, हुजूर!"

—वीणा वल्लभ

बालकृष्ण परचुरे, दिल्ली छावनी–१० :

दोस्तकी परख क्या है?

जो तुम्हारे मालको अपना ही माल समझे!

देवेश उपाध्याय, होशंगाबाद :

दादाकी प्यारी दाढ़ी की फोटो एक बनाई,
सतरंगोंने उसमें आकर अपनी छटा दिखाई,
इंद्रधनुष बनकर वह नभपर दूर दूर तक छाई,
इसी लिए क्या दादा, दाढ़ी बच्चोंके मन भाई?

नहीं नहीं, यह तो दाढ़ीकी अच्छी शामत आई!

विनेशकुमार सक्सेना, कानपुर–१२ :

प्रत्येक बाप अपने बेटेको अपनेसे बड़ा क्यों देखना चाहता है?

जिससे यह कहनेका मौका मिले कि हम भी बड़ों-बड़ोंके बाप हैं!

एम. एस. खान, महेश्वर, जिला खरगोन :

मंदिरमें घंटा क्यों बजाया जाता है?

जिससे बाजारकी मंदी-तेजीकी आवाजें कानोंसे निकल जाएं!

उमादेव कल्याणचंद्र गंगराड़े, भीकनगांव :

दुनियाकी सबसे खूबसूरत चीज क्या है?

दर्पणमें झांकते ही दिखाई देने वाली तसवीर!

अशोककुमार माथुर, जयपुर :

नेहरूजी हमारे जीवन थे, शास्त्रीजी शान, इंदिराजी प्राण, तो जनता?

ये सारी चीजें घटकर जो रह जाए!

अशोक श्रीवास्तव, सीतापुर :

४२० की संख्या बुरी क्यों समझी जाती है?

क्योंकि कानूनकी यह धारा सिद्ध हो जानेपर सजा तो मिलती ही है, हंसी अलगसे उड़ती है!

एस. सुरेशकुमार, दल्ली राजहरा:

ज्योतिषी खुद अपने ही हाथको देखकर क्या सोचता है?

कि अपने ही मुंहपर तमाचा जड़े, तो कैसा रहे?

सत्यनारायण, नागपुर–२ :

आजकल सारी वस्तुओंके मूल्य बढ़ रहे हैं मगर सरकार रुपयेका मूल्य ही क्यों घटा रही है?

उल्टी बात—जनता उसे जितना आज चाहती है, उतना कभी नहीं चाहती थी!

पूर्णचंद्र पटनायक, नन्दीनी, दुर्ग:

मुर्गे बांग देते हैं, मुर्गियां क्यों नहीं?

लो, यह है हमारे भावी खाद्य-मंत्री! अरे, मुर्गियां अंडे देती हैं, बांग नहीं!

कृष्णकिशोर गुप्ता, मिहोना:

बच्चे राष्ट्रके रत्न होते हैं, तो उनके मां-बाप?

उन रत्नोंका बोझ ढोने वाले!

शोभा जैन, रोहतक :

दूधके उबाल और मनके उबालमें क्या अंतर है?

मनपर बाल आनेपर ही उबाल आता है, दूधमें नहीं!

जगतारसिंह, नई दिल्ली–१५ :

यदि कोई मूर्ख बुद्धिमानसे और बुद्धिमान मूर्खसे दोस्ती करना चाहे, तो समझदारी किसकी होगी?

जो इस चाहको राह न मिलने दे!

कुन्दनकुमार, गढ़हरा (मुंगेर) :

लोग कहते हैं किस्मत फूट गई है। क्या किस्मत मिट्टीकी होती है, जो फूट जाती है?

जरूर होती होगी, क्योंकि अगला सारा साल उसे जोड़नेमें लग जाता है!

धनेशकुमार विजय, नई दिल्ली–५ :

माताका दर्जा बड़ा है या पिताका?

पहली तारीखको पिताका, पंदरहके बाद [माताका!

कु. विमला गोहिया, पिपरिया :

किसी किसीके चेहरेको देखकर लोग सूरतपर बारह बजना क्यों कहते हैं?

क्योंकि गिन गिनकर बारह चपत घड़ीके मुंहपर इसी समय बजते हैं!

सुधीरकुमार जैन, रामपुर :

यद्यपि पुलिसमें अधिकतर मनुष्य पुरुष होते हैं, फिर भी पुलिस स्त्रीलिंग क्यों है?

क्योंकि बेलनकी मार डंडेकी मारसे अधिक प्रभावकारी समझी जाती है!

सुरेंद्र मखीजा पंजाबी, बिलासपुर :

'लंबू इन हांगकांग' तो 'छोटू इन' कहां?

लंबूकी जेबमें!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१

शुभांगी खांडकर, जमशेदपुर :

आप जब बूढ़े और चिड़चिड़े हो जाएंगे, तब हमारे अटपटे प्रश्नोंके चटपटे जवाब कौन देगा?

उस वक्त इस स्तंभका शीर्षक होगा— 'कुछ चटपटे कुछ चिड़चिड़े!'

गुरबक्ससिंह, वाराणसी :

जिस हर कोई देनेको तैयार रहता है पर लेता कोई नहीं, ऐसी वस्तु क्या है?

बुराई!

निलम वर्मा, पटना :

कहते हैं बंदर हमारे पूर्वज हैं। यदि बंदर आपके घर आ जाए, तो आप क्या करेंगे?

भाषा संबंधी वाद-विवाद!

मोहम्मद आमीन, गौहाटी-१ :

क्या कोई ऐसा बाजार भी है, जहां अक्ल बेची जाती है?

क्यों नहीं, 'पराग' में हर महीने अक्लका चांदनी-चौक लगता है!

★ प्रदीपकुमार अमोलिक, ४३४ भद्रताल, आर्यन प्रेस कंपाउंड, सिटी काफी हाउसके सामने, जबलपुर (म० प्र०) :

सागरसे गहरा और हिमालयसे ऊंचा इस संसारमें क्या है?

क्या 'इरादे हैं'!

★ अजयचंद्र विद्यार्थी, विद्यार्थी बिल्डिंग, पो० हवेली खड़गपुर, जिला मुंगेर (बिहार) :

काली कोयल व काले कौवेकी बोलियोंमें इतनी असमानता क्यों है?

क्योंकि कोयल हर समय और हर जगह नहीं बोलती! ●

वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता निर्णय

'पराग' वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता घोषित करनेका उद्देश्य हिंदीमें बच्चोंके लिए रोचक वैज्ञानिक कहानियां प्रस्तुत करना था। हिंदी लेखकोंको इस ओर प्रवृत्त और उत्साहित करनेके लिए क्रमशः १००० रु, ६०० रु. और ४०० रु. के तीन पुरस्कार घोषित किए गए थे। प्रतियोगिताके नियमोंमें इस बातपर विशेष जोर दिया गया था कि **'बाल-सुलभ मनोरंजन चुनी हुई कहानियोंका प्रधान गुण माना जाएगा'**। यह भी साफ तौरसे बता दिया गया था कि **'वैज्ञानिक तथ्योंपर मुक्त कल्पना वांछित है'**।

इस प्रतियोगितामें कुल ८९ कहानियां प्राप्त हुई। खेद है कि कोई भी कहानी इस स्तरकी नहीं निकली, जिसे 'पराग' में सामान्य रूपसे प्रकाशित करके भी बाल-पाठकोंका मनोरंजन होनेका विश्वास होता। अधिकतर विज्ञ लेखकोंने अपना ध्यान बच्चोंको अधिकसे अधिक वैज्ञानिक तथ्य बतानेकी ओर रखा। कई कथानक इतने जटिल थे कि उनको समझ पाना बच्चोंके लिए संभव नहीं था। कुछ अच्छी पांडुलिपियोंका झुकाव कथानकके बहाने बच्चोंको पृथ्वीसे चंद्रमा या अन्य ग्रहों तक पहुंचाने और वहांका छोटा-मोटा सैर-सपाटा करा देने तक ही सीमित रहा। कथानकके पात्रों, तथ्यों, स्थितियों आदिके बीच ऐसे कुतूहल-तत्वोंका सर्वथा अभाव दिखाई दिया, जो आरंभसे अंत तक कहानीको पढ़नेके लिए बाल-पाठकको बाध्य करे। वैज्ञानिक कथाके मूल उपकरणों—रहस्य, रोमांच, कुतूहल, संघर्ष आदिका निर्वाह किसी कहानीमें नहीं हो पाया।

इस रूपमें किसी कहानीको पुरस्कृत करके 'पराग' में प्रकाशित करनेका अर्थ था उसे आदर्श वैज्ञानिक बाल-कथा मानना और एक उदाहरण प्रस्तुत करना। यह स्थिति भविष्यमें इस प्रकारकी अच्छी बाल-कथाओंकी रचनाके लिए घातक होती। अतः अत्यंत दुःखके साथ, पूर्व-घोषित अंतिम नियमका आश्रय लेते हुए सभी पुरस्कार रोके जा रहे हैं। जिन रचनाओंके साथ समुचित डाक-टिकट थे, उन्हें १५ नवंबर तक वापस भेज दिया जाएगा।

किंतु इस प्रतियोगिताकी असफलताका अर्थ यह नहीं है कि हिंदीमें मौलिक वैज्ञानिक बाल-कथाओंकी रचना अशक्य है। 'पराग' की ओरसे बराबर लेखकोंको इस विषयमें प्रोत्साहन मिलेगा। इस प्रतियोगितामें जिन लेखकोंने तनिक भी अच्छे प्रयत्न किए हैं, श्रेष्ठ वैज्ञानिक कथाओंके लिए पराग सदैव उनका स्वागत करेगा। —सं०

मैया कबहूं बढ़ेगी

रोचक लेख

मनुष्योंमें मूंछको जितना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है, उतना ही महत्व जानवरोंमें पूंछको दिया जाता है। शेरसे लेकर सियार तक प्रत्येक जानवर अपनी प्यारी पूंछपर जान छिड़कता है। मूंछोंकी तरह पूंछें भी कई प्रकारकी होती हैं और जानवरोंने उन्हें अलग अलग दर्जा भी दिया है। कोई तलवारकी तरह अपनी पूंछ उठाए फिरता है, कोई हंसिएकी तरह, और लंगूर तो अपनी पूंछसे चाबुकका ही काम लेता है। इसी प्रकार सभी जानवर अपनी पूंछको कोई न कोई स्थान दिए हुए हैं। मूंछोंहीकी तरह पूंछोंकी भी कई किस्में होती हैं जैसे लहरिएदार पूंछ, खमदार पूंछ, खड़ी पूंछ, पड़ी पूंछ, झड़ी पूंछ, फुलझड़ी पूंछ, मूंछकट पूंछ, दमकट पूंछ आदि। पूंछोंकी जितनी किस्में संसारमें मौजूद हैं, अपनी मूंछोंकी नहीं हो सकतीं, क्योंकि पूंछ अनेक जीव-जातियोंमें पाई जाती है, जबकि मूंछका गौरव सिर्फ मनुष्य, शेर, बिल्ली आदि बहुत कम प्राणियोंको प्राप्त है। यों भी पूंछ जीवधारियोंकी सर्वोत्तम और सर्वप्रिय चीज है।

चूहा अपनी पूंछसे घी या तेल आदि पीनेका काम लेता है। वह अपनी पूंछ घी या तेलके बर्तनोंमें डुबो देगा और इत्मीनानसे उसे चूस लेगा। कुत्ता अपनी पूंछ हिलाकर खुशी प्रकट करता है। बिल्ली क्रोधमें अपनी पूंछ खड़ी कर लेती है। बिच्छूकी पूंछ तो उसकी पूंछके कारण ही है जिसमें जहरके इंजेक्शन छिपे रहते हैं। मछलियां अपनी पूंछसे प्रायः तैरनेमें सहायता लेती हैं। 'पाइपफिश' अपनी पूंछ दलदलमें टिकाए मुंह फैलाकर अपने शिकारकी प्रतीक्षा करती है, जैसे पूंछपर ही उसका शिकार करना निर्भर करता हो। व्हेल अपनी पूंछसे बड़े बड़े जहाजोंको डुबो देती है।

रेप्टाइल वर्गके प्राणी अपनी कटी हुई पूंछको दुबारा उगा लेनेमें सफल हो जाते हैं। खड़खड़िया सांप अपनी पूंछ से खड़-खड़की आवाज उत्पन्न करता है और इसी लिए उसका नाम खड़खड़िया सांप रखा गया है। अजगर अपनी पूंछसे पेड़की डालको जकड़े हुए अपने शिकारकी ओर बढ़ते हुए देखा जाता है।

वीरकुमार अधीर

kissekahani.com

पूंऊंऊंऊंछ

'टिफिन कैरियर' का काम भी कुछ प्राणी अपनी पूंछसे ही लेते हैं। कुछ स्थानोंकी भेड़ें अपनी पूंछमें चर्बी इकट्ठी किए रहती हैं जिससे खानेकी कमी होनेपर काम चलाया जा सके। इसी प्रकार रेगिस्तानी छिपकलियां और चूहे भी अपनी पूंछमें चर्बीका संग्रह किए रहते हैं।

यह मनुष्यका दुर्भाग्य है कि कुछेक हजार वर्षोंसे उसकी पूंछ घिसती चली आ रही थी और यहां तक कि उसका नामोनिशान तक नहीं मिलता। एक जमाना था, जब हिन्दुस्तानकी बड़ी बड़ी हस्तियां अपनी पूंछपर उसी तरह अभिमान किया करती थीं, जिस तरह आजकल लोग अपने बालोंपर गर्व करते पाए जाते हैं। पिछले जमानेमें लोग भारतको सोनेकी चिड़िया कहा करते थे और चूंकि हर चिड़ियाकी दुम होती है इसलिए बार बार मुझे भारतकी दुमका ख्याल आता है, जो दूर आपानके पास समुद्रमें लहराती हुई दिखाई देती थी और जिसके एक सिरेपर सिंगापुर पूंछके सिंगारकी तरह आज भी विद्यमान है। परंतु आज यह सोनेकी चिड़िया दाने दानेको मोहताज है और इसकी पूंछ कट चुकी है।

आश्चर्यकी बात नहीं, यदि मनुष्यकी पूंछ घिसते घिसते समाप्त हो गई हो, क्योंकि मनुष्यने बादमें उसकी कद्र करनी छोड़ दी थी और उसके द्वारा ही अपने छोटे-मोटे कार्य निपटाने लगा था। फलस्वरूप वह आलसी होता जा रहा था, सो तो अलग, उसने पूंछके गौरवको भी मिट्टीमें मिलानेमें कोई कसर बाकी न छोड़ी थी। स्वाभाविक था, उसकी पूंछ घिस-घिसकर समाप्त हो जाती।

मनुष्य ही एक ऐसा चौपाया है जिसने दो पांवोंपर शरीरका बोझ लाद दिया और अपने अगले दो पांवोंको हाथका नाम देकर उनसे काम करने लगा। अन्य चौपायोंने मनुष्यका यह करतब देखा, तो आश्चर्यचकित रह गए, बल्कि उन्हें उतना ही मजा आया जितना सरकस देखनेमें आता है। इसलिए बहुतसे जानवरोंने उसकी देखा-देखी उसीकी तरह दो पांवोंपर चलने-फिरनेका अभ्यास आरंभ कर दिया। परंतु जब अभ्यस्त मनुष्यके दो पांवोंपर चलनेके परिणामपर अन्य चौपायोंकी दूरदर्शी दृष्टि गई, तो उन्होंने तुरंत अभ्यास छोड़ दिया। उन्होंने देखा, मनुष्यकी पूंछ जमीनपर लटक रही है और चूंकि वह उसीपर बैठने भी लगा है, इसलिए वह दिन और रात तेजीसे घटती जा रही है। भालू और बंदर, यद्यपि दो पांवोंपर खड़े होनेका तरीका सीख चुके थे, परंतु जब उन्होंने मनुष्यकी पूंछका तेजीसे यह घटाव देखा, तो वे चार पांवोंपर चलने-फिरने लगे।

आखिर, एक वक्त आया, जब मनुष्यकी पूंछ पूरी तरह नष्ट हो गई और मनुष्यका गौरव मिट्टीमें मिल गया। इसलिए परम्पराके अनुसार जंगलके जानवरोंने इस दुमकट प्राणीका बहिष्कार कर दिया और तभीसे मनुष्य जंगलसे दूर, सभी प्राणियोंसे अलग नगर बसा बसाकर रह रहा है। परंपरा यह है कि जिस प्रकार मनुष्योंमें ही कुछ वर्षों पहले तक बगैर मूंछके मनुष्यको मर्दानगी और मनुष्यताके दर्जेसे नीचा समझा जाता था उसी प्रकार जानवरोंमें आज भी पूंछविहीन जानवरोंको हेय दृष्टिसे देखा जाता है। मनुष्यों और जानवरोंमें अलगाव बढ़नेका मुख्य कारण भी यही है।

हाथीकी पूंछ देखी है? इतने बड़े शरीरपर ऐसी मालूम होती है, जैसे लंबे मोटे तनेपर गिलहरी दौड़ रही हो। भगवानने जब दुनिया बनाई और हाथीने पहलेपहल अपनी पूंछ देखी, तो बड़ा रोया। दौड़ा दौड़ा विश्व-नियंताके चरणोंमें जा पहुंचा और रोनी सूरत बनाकर खड़ा हो गया।

यह देखकर भगवानने स्वयं ही पूछा, "क्या बात है, गजराज, आज कुछ उदास हो?"

"गजराज कहां, महाराज, मैं तो पूरी तरह फटराज भी नहीं हूं! मेरी पूंछ एक फीट लंबी भी मुश्किलसे है और आप मुझे ही गजराज कह रहे हैं, जबकि लंगूर पूंछके हिसाबसे गजराजसे भी बढ़चढ़कर हैं!"

"अच्छा अच्छा!" विश्वनियंताने गंभीर होकर हाथीके पीछे गौरसे देखा। वह बड़ी दुविधामें पड़े, क्योंकि जो निर्माण हो चुका था उसमें काटछांटकी गुंजाइश नहीं थी। और दुबली-पतली पूंछमें इतना मिट्टी-गारा भी नहीं लगा था कि उसे खींचकर लंबी कर देते।

एकाएक सोचते सोचते उनकी दृष्टि हाथीके चौड़े-भारी माथेपर गई। उन्होंने माथेका नाकवाला भाग जोरोंसे पकड़कर खींच दिया और काफी खींच दिया, जिससे हाथीके आगे भी सूंड लटक गई।

तब वह बोले, "अब तो खुश हो, गजराज? और जानवरोंके सिर्फ पीछे पूंछ होती है, तुम्हारे आगे-पीछे दोनों तरफ पूंछ हो गई!"

हाथीने पूतली ऊपर-नीचे नचाकर देखा और खुशीसे फूलकर कुप्पा हो गया। पीछेकी पूंछ काम करे न करे, मगर हाथीकी आगेकी पूंछ क्या क्या गजब नहीं ढाती!

पूंछका मामला ही ऐसा है। पूंछके न होनेसे मनुष्यको न केवल अन्य चौपायोंकी बिरादरीसे अलग होना पड़ा, बल्कि उसने अत्यधिक अपमान भी महसूस किया और तभी उसने अपनी झेंप मिटानेको पूंछसे घृणा करनी आरंभ कर दी, यहां तक कि वह परस्पर वार्तालापमें भी पूंछको हेय प्रदर्शित करने लगा, "क्या पूंछकी तरह मेरे पीछे पीछे लगे रहते हो! अपना काम देखो!"—यह वाक्य नाक-मुंह सिकोड़कर इस प्रकार कहा जाता है, जैसे पूंछ होना कोई हंसीकी बात हो।

वास्तवमें ये सब मनुष्यके अपनी झेंप मिटानेके तरीके हैं। वरना पूंछ जैसी चीज प्रत्येक जीवधारीके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण वस्तु है। अपने अचेतन मनसे प्रभावित होकर झेंपू मनुष्यने पूंछ न होनेके कारण ही आगे टाई लटकाना आरंभ किया था। शायद रंगबिरंगी टाई द्वारा वह और जानवरोंको जलाना चाहता है और इस प्रकार पूंछकी कमीको पूरा करता है। महिलाएं प्रायः एक एकको बजाए दो दो पूंछें लटकाती देखी जाती हैं। यह मनुष्यके अचेतन मनकी क्रिया है। अतएव इन पूंछोंके उचित स्थानपर न होनेकी तरफ ध्यान देनेकी जरूरत नहीं।

कल्पना कीजिए, यदि आजके जमानेमें भी मनुष्यकी पूंछ होती, तो आप पिताजीकी पूंछसे कपड़ेके थान नाप रहे होते अथवा अपनी दुम हिला हिलाकर कबड्डी खेल रहे होते या पूंछोंको हाकीके स्थानपर इस्तेमाल करते और 'हाकी मैच' की बजाए 'पूंछ मैच' देखने जाते तथा 'लाइन मैन' अपनी झंडीका काम अपनी पूंछसे ले रहा होता। कितना अच्छा लगता! आपकी तबीयत बाग-बाग हो जाती, जब मिलते समय हाथ मिलानेके बजाए आदमी पूंछसे पूंछ मिला रहा होता और पूंछके द्वारा ही दुआ-सलाम हुआ करती। और वास्तवमें पिछले जमानेमें ऐसा ही हुआ करता था!

आज अगर पूंछ होती, तो कपड़ोंकी सिलाईमें जरूर ही फर्क पड़ गया होता या पतलून और निकरके पीछे पुछल्ले जरूर सिलवाए जाते और पुछल्लेके आखिरी सिरेपर कोई खूबसूरत फूल सिलवाकर आप अपनी पूंछ हिलाते हुए चले जा रहे होते! परंतु दुर्भाग्यसे आज मनुष्य पूंछ-विहीन है।

हनुमानजीके पास पूंछ थी और शायद उनके जमानेके मनुष्योंमें से यथासंभव आधोंकी ही पूंछें गायब हो पाई थीं। इसी लिए रामायणमें यत्र-तत्र हनुमानजीके वर्णनमें उनकी पूंछका भी कलापूर्ण बखान किया गया है। परंतु त्रेतासे द्वापर युगके मनुष्यकी पूंछ गायब हो चुकी थी, वरना सूरदासजी 'मैया कबहूं बढ़ेगी चोटी . . .' के स्थानपर ग्वाल-बालके साथ भगवान श्रीकृष्णको कुछ और ही कोरस गाते दिखाते।

और आप तो सचमुच अपनी अपनी पूंछसे ही लड़ रहे होते। दिल्लीसे मेरे पास एक हितैषीका पत्र आया कि पानीमें रहकर मगरसे बैर ठीक नहीं होता। और मुझे ख्याल आया कि मगरकी पूंछ आरेकी तरह चलती है इसलिए यह राय ठीक ही मिली है। लेकिन मैं समझता हूं, यदि मगर अपनी पूंछका गलत इस्तेमाल करता है, तो उसकी पूंछ काटनेका प्रयत्न किया ही जाना चाहिए।

लोग घोड़ेकी पूंछ काटकर बच्चोंकी मूंछ बनानेके काममें लाते हैं। बिल्लीका दुम दबाकर भागना मशहूर है, लेकिन कुत्तेकी पूंछको पांवके जूतेसे दबा तो दीजिए, कैसा ही पालतू और वफादार क्यों न हो, जानको आ जाएगा और आप दुम दबाकर भागते नजर आएंगे। जनाब, यह कुत्तेकी पूंछ ही है, जिसे बारह वर्ष नलकीमें रखा गया, मगर जिदपर आ गई, तो सीधी न हुई!

गिलहरीको देखकर कई बार पूंछ और पूंछ, अर्थात दो जुड़वां पूंछोंका धोखा हो सकता है। ध्यानसे देखा जाए, तो बंदरकी पूंछ बाक यदा उसके शरीरके अनुपातमें मालूम होती है। अब यह भी कोई तुक है कि सूअर तो मोटा-ताजा बना दिया गया और पूंछ लटका दी बालिश्त भरकी! ऐसा लगता है, जैसे कोई चुहिया बिल्लीसे डरकर भाग रही हो! कई बार सांपको देखकर यह पता नहीं चलता कि सांप किधर है और सांपकी पूंछ किधर। बंदरको देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पूंछ भी अपने इस पूर्वजकी ही तरह नपी-तुली और दिल लुभाने वाली रही होगी। अब भला मनुष्यके इस लुप्त अंगकी यादमें यह रोना ठीक ही तो है कि "मैया कबहूं बढ़ेगी पूंछ ऊं ऊं ऊं छ!

३, हनुमान चौक, देहरादून (उ. प्र.)

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें २० नवंबर तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मजेदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे मिलेगा, 'पराग' में उन सबके नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डों पर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद–११)' पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।**

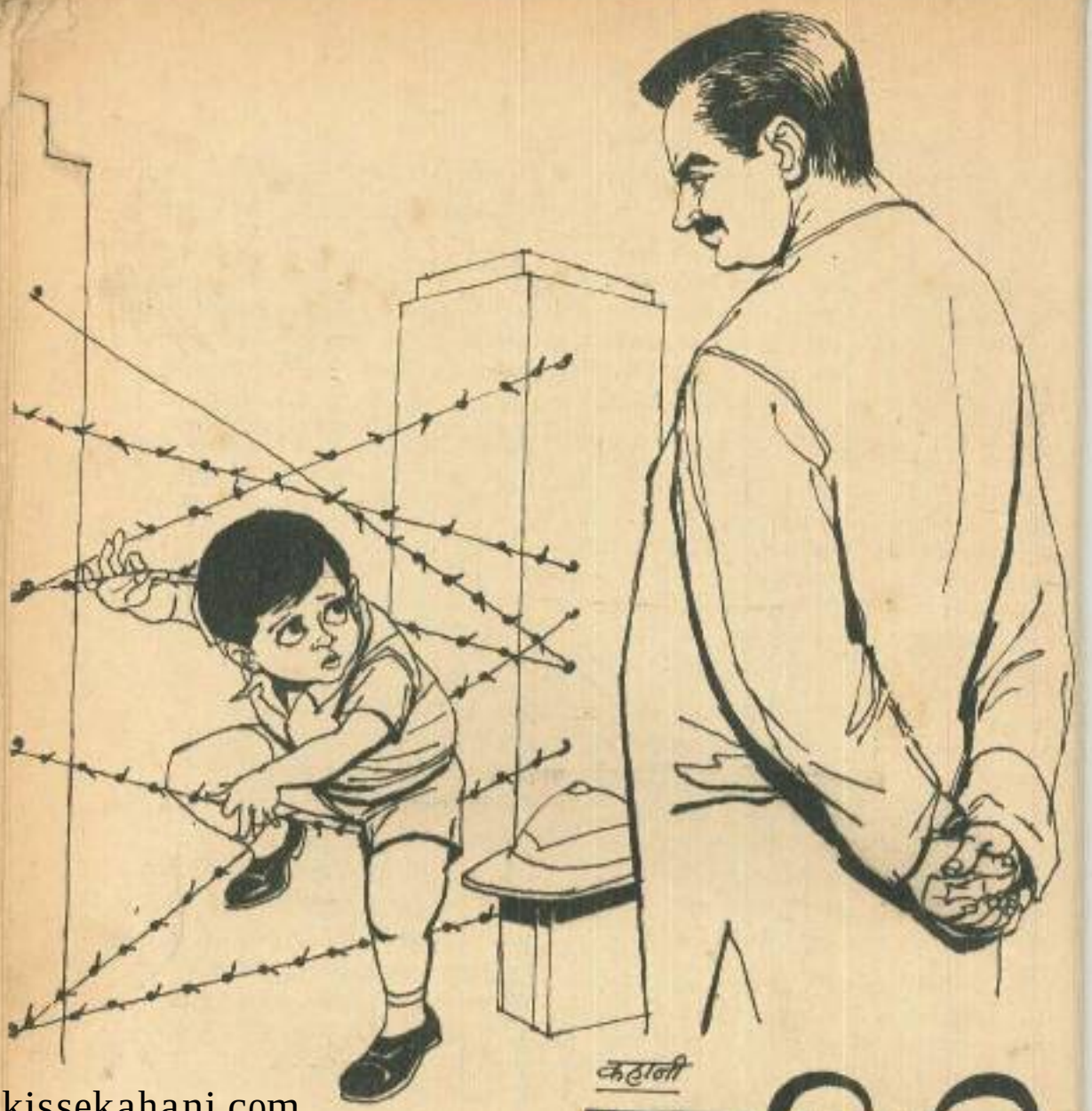

kissekahani.com

कहानी

पहली जीत

'बेला बिल्डिंग' की दीवारें जब खड़ी हो रही थीं, तब डिम्पलने इस दुनियामें कदम ही रखा था। धीरे धीरे बिल्डिंग पूरी हुई और बेच दी गई।

सबसे नीचेवाले मालेके कोनेवाले घरमें शर्माजी रहने आए। बिल्डिंगका एक खुला फाटक उन्हींके घरके सामने पड़ता था। उन्होंने देखा कि दुनिया भरके लोग उसी फाटकसे आने-जाने लगे हैं और कालोनीमें ट्रकों व कारोंका आगमन भी वहींसे होने लगा है। चक्कर काटकर मुख्य फाटकसे जाना कोई पसंद नहीं करता। उन्हें लगा कि उनका ग्राउंड एक अच्छी खासी रोड बन गया है।

उन्होंने यह बात बिल्डिंगके और लोगोंके सामने पेश की और सबकी सलाहसे फाटकको कांटेदार तारोंसे बंद करवा दिया।

बच्चोंको इस फाटकके बंद होनेपर बहुत दुःख हुआ। पर बेचारे कर ही क्या सकते थे?

का झंडा

—मंजु जैन

उन्होंने मजबूरन मुख्य फाटक वाले लंबे रास्तेसे ही आना-जाना शुरू कर दिया। सारी कालोनीके डिम्पलसे बड़े बड़े सब बच्चे इस फाटकका थोड़ा थोड़ा फायदा उठा चुके थे। यह तो केवल उसकी ही बदनसीबी थी कि जब उसके स्कूल जानेके दिन आए, तो रास्ता बंद कर दिया गया।

डिम्पल अब पांच वर्षका हो गया था। इतनी-सी उम्रमें ही उसकी अक्ल काफी काम करने लगी थी। वह हर बातमें दिमाग लड़ाता था। जब उसे पहले ही दिन चक्कर लगाकर घर पहुंचनेमें नानी याद आई, तो उसके सामने यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि घर जल्दी कैसे पहुंचा जाए। आखिर एक दिन उसने अपनी समस्याका हल निकाल ही डाला।

उसने सोचा कि उसका यह छोटा-सा शरीर इन तारोंमेंसे तो निकल ही सकता है। कुछ दिनोंमें तार अपने आप ढीले हो जाएंगे और फिर तो वह आसानीसे निकल जाया करेगा। वह मन ही मन बड़ा खुश हुआ और धूपका टोप सिरपर लगाकर, हाथमें किताबोंकी पेटी लेकर स्कूलसे ऐसे चला जैसे कोई बड़ा बाबू हो।

फाटकके नजदीक आकर पहले तो वह तारोंसे रुके उस रास्तेको खड़े होकर दो मिनिट तक बड़ी अकड़से देखता रहा, फिर 'बेला बिल्डिंग' की ओर देखकर थोड़ा व्यंग्यसे हंसा जैसे उसे चिढ़ा रहा हो। सिरसे धूपका टोप उतारा। पहले पेटी तारोंसे निकालकर अंदर रखी, फिर स्वयं इधर-उधर देखता हुआ तारोंमेंसे निकल गया।

इस तरह तीन-चार दिन तक डिम्पल बड़ी आसानीसे घर पहुंचता रहा।

एक दिन जब वह तारोंमें से निकल रहा था, तो 'बेला बिल्डिंग' के वही मशहूर अंकल 'शर्माजी' उसे सामने खड़े मिले। वह उसे बड़े गौरसे देख रहे थे।

उनकी यह अदा देखकर उसने जल्दीसे नमस्तेके लिए हाथ जोड़ दिए। इससे पहले कि वह कुछ कहें वह दांत निकालता हुआ उनके आगेसे निकल गया।

अगले दिन फिरसे जब शर्मा अंकल उसे वहीं खड़े मिले, तो उसने दूरसे ही अपने बैगमेंसे एक टाफी निकाली, उनके सामनेसे ही वह तारोंमेंसे निकला, और फिर बिना किसी हिचकके उनके सामने आकर खड़ा हो गया। टाफी शर्मा अंकल-के हाथमें पकड़ा दी। बेचारे अंकल हाथमें टाफी लिये उसे देखते ही रह गए। वह मुस्कराकर वहांसे कब उड़न्छू हो गया, उन्हें इसका पता ही नहीं चला।

इसी तरह शर्माजी उसकी खबर लेनेके निश्चयसे रोज वहां खड़े होते थे। किंतु, वह छोटा-सा बालक उन्हें हमेशा छोटी-मोटी कोई भी रिश्वत देकर उनका मुंह बंद कर देता था। कुछ दिनों बाद शर्माजीको महसूस होने लगा कि वाकई बच्चोंको दूसरा रास्ता बहुत दूर पड़ता है। क्यों न इस फाटकमें बच्चोंके आने-जानेके लिए एक छोटा-सा रास्ता बना दिया जाए?

आखिर एक दिन बिल्डिंगवालोंकी मीटिंगमें उन्होंने डिम्पलकी करतूतोंके ब्यौरेके साथ यह प्रस्ताव भी रखा कि उस फाटकमें एक छोटा-सा रास्ता निकाल ही दिया जाए, जिससे कमसे कम बच्चे वगैरह अंदर आ सकें। आखिर काफी सोच-विचारके बाद यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया।

अगले ही दिनसे वह छोटा-सा आने-जाने-का रास्ता तैयार होने लगा और दो दिनमें बनकर तैयार हो गया।

डिम्पल यह सब देखकर मन ही मन फूला न समाया। उसने सोचा—हो न हो यह उसीकी करनीका फल है।

आज डिम्पल बेहद खुश था। इसी खुशीमें वह बाजारसे एक छोटा-सा दस पैसेवाला झंडा खरीदकर लाया और उस झंडेको उसने छोटेसे दरवाजेके पास ही बांसकी बल्लीमें गाड़ दिया—बाहरी दुनियाके मुकाबले अपनी जीतका सबसे पहला झंडा। ●

१० नरुला बिल्डिंग,
२१ वां रास्ता, कंबारी कालोनी,
चेम्बूर, बम्बई—७१

kissekahani.com

मेहरबान, छाते उसपर टांगिए और जूतियां स्टैन्ड के पीछे रखिए!
वास्तव में आपलोगों के आने से हमें बड़ी खुशी हुई!
अरे, छोटू, यह बैठे क्या कर रहे हो, जल्दी जाओ मेहमानों के लिए मिठाई वगैरह का प्रबंध करो!
ओ हो! बस अभी गया, और अभी आया! जब तक तुम बातों से इनका दिल बहलाओ!
थोड़ी देर बाद...
माफ कीजिए, छोटू को मिठाई लाने में जरा देर हो गई!
कोई बात नहीं। मगर मिठाइयों से मजा आ गया!
और लीजिए!
वाह, वाह!
अच्छा भई, हम लोग चलते हैं। तुम्हारे प्रेम और तुम्हारी मिठाइयों के लिए धन्यवाद!
अजी हम किस काबिल हैं। यह तो आपकी जूतियों का कमाल है!
अरे! हमारे छाते और जूते कहां हैं?
यही तो कमाल है!

kissekahani.com

भोलू भाईकी भूल-भुलैया-१

'वह' क्या है?

भोलू भाई एक जमानेमें बड़े छोटसे थे। बिल्कुल बच्चे। अभी दुनियाकी रंगीनियोंको देखते भर थे। कुछका नाम मालूम था, कुछका नहीं। एक दिन उन्होंने शैतानी की। उसका जो फल उन्हें मिला, तो रोते रोते पड़ोसके डाक्टर साहबके दवाखानेमें पहुंचे।

डाक्टर साहबने हमदर्दीसे भोलूसे पूछा, "क्या हुआ, बेटा?"

भोलू भाई अपने घरकी तरफ हाथ उठाकर बोले, "उसने काट खाया—यहां, इस जगह!"

डाक्टर साहबने 'उसके काटे' की जगह मरहम पट्टी की और भोलू भाईसे मजाकमें पूछा, "किसने काटा था, बेटा?"

"उसने!" भोलू भाईने फिर अपने घरकी तरफ हाथ उठाया।

"आखिर उसकी शकल-सूरत भी तो कुछ होगी?" डाक्टरने भोलू भाईके भोलपनका मजा लेते हुए पूछा।

"उसकी शकल एकसी तो कभी रहती ही नहीं, डाक'साब," भोलू भाईने बताया। "वह कोई जानवर थोड़े ही है।"

"उसने काट खाया—यहां, इस जगह!"

"तो कोई दूसरी तरहका चलता-फिरता जीव है?" डाक्टरने हंसकर पूछा।

"ना, डाक'साब, उसमें जान ही कहां है!" भोलू भाईने बताया।

"यानी तुम्हारा मतलब है कि आकार-प्रकारमें वह घटता-बढ़ता नहीं?"

"खूब घटता-बढ़ता है," भोलू भाई स्वर चकराकर बोले।

"कोई खनिज पदार्थ है, वनस्पति है?"

"ना," भोलू भाईने सिर हिलाया।

"तुम उसे देख सकते हो?"

"हां," भोलू भाई बोले। "उसके शरीरपर गिरगिटकी तरह एक रंग आता है, एक जाता है, डाक'साब!"

"बड़ी निकम्मी चीज है!" डाक्टर साहब बोले। "उस कम्बख्तको घरसे निकाल बाहर करो। न घरमें उसकी शकल दिखाई दे, न वह काटे।"

ऊं ऊं ऊं ऊं! भोलू भाई रोने लगे। बोले कि उसके बिना तो घरवालोंका जीना दूभर हो जाएगा। उसे घरसे कैसे निकाल बाहर किया जा सकता है?

"देखो," डाक्टर साहबने समझाया, "जब वह चीज किसीके साथ मिलकर नहीं रह सकती—"

"पर, डाक'साब," भोलू भाई बीचमें ही बोले, "वह तो सबके साथ मिल जाती है।"

"पर मिलकर शांतिके साथ बैठ जाती है?" डाक्टर साहबने हंसते हुए पूछा।

"ना, एक पल भी नहीं," भोलू भाई बोले।

"अच्छा, वह कोई ठोस चीज है?"

"ना," भोलू भाईने जोरसे गरदन हिलाई।

"कोई बहने वाली चीज यानी द्रव है?" डाक्टर साहब उसके भोलेपनका खूब मजा लेते हुए बोले।

"ना," भोलू भाईने पहले से भी ज्यादा जोरसे सिर हिलाया।

"तो फिर जरूर कोई गैस-नुमा चीज होगी?"

"ऊंहुक," भोलू भाईने इसपर भी इनकार किया ।

"तो तुम एक काम करो," डाक्टर साहब बोले, "अपने 'पराग' पढ़ने वाले भाई-बहनोंसे पूछो उसका नाम क्या है ।"

भोलू भाईने सहमतिमें सिर हिलाया । अब, बच्चो, करो भोलू भाईकी सहायता । देखें कितनी दूरकी कौड़ी लाते हो ।

मोतीराम किसके ?

एक दिन रामूने भोलू भाईसे कहा कि चलो तुम्हें आज अंगरेजी रेस्तरांमें खाना खिलाकर लाएं । रमेश भी चलेगा । भोलू भाई फौरन तैयार हो गए । तीनों एक रेस्तरांमें पहुंचे । रामू मेजबान था ही । उसने ही आर्डर दिया । मीनूपर सीपका नाम देखकर भोलू भाई चौंके । क्या सीप भी खाई जाती है ?—उन्होंने रामूसे पूछा ।

"हां, एक तरहकी सीप होती है, जो खाई जाती है । बहुत स्वादिष्ट बनती है । लो, मैं मंगाता हूं—" और उसने बैराको अन्य खाद्य पदार्थोंके साथ एक एक सीपका आर्डर भी दिया ।

जब खाना मेजपर लग गया, तो रामू और भोलू भाईने खूब स्वाद ले लेकर सीप खाई । लेकिन रमेशको यह अटपटा पदार्थ पसंद नहीं आया और उसने अपनी सीप भोलू भाईके आगे बढ़ा दी । भोलू भाईको सीप इतनी अच्छी लगी थी कि उन्होंने रमेशकी सीपपर भी हाथ साफ करना शुरू कर दिया । संयोगसे उस सीपमेंसे निकला एक सच्चा मोती । भोलू भाईने चिढ़ानेके लिए रमेशको मोती दिखाया ।

रमेशने कहा, "देख, भाई भोले, सीप मैंने तुझे खानेको दी थी । सीप मेरी थी, इसलिए मोती मेरा है । इधर बढ़ा दे इसे ।"

"ठहर जा, भई," रामूने कहा, "मैं तुम लोगोंका मेजबान हूं । इस दावतपर पैसा मेरा खर्च हुआ है । जो तुमने खाया सो ठीक, न खाया, तो उसपर मेरा हक है । मोती मेरा है । इधर बढ़ा दे इसे ।"

भोलू भाई मोतीको कसकर मुट्ठीमें बंद किए हुए थे । इन तीनोंकी बातचीत रेस्तरांका मालिक भी सुन रहा था । वह फौरन अपनी कुरसीसे कूद कर आया और बोला ।

"देखो जी, आप लोग सिर्फ खाद्य-पदार्थोंके खरीदार हैं । प्लेट, प्याला, गिलास, चम्मच वगैरा जिस तरह आपके नहीं हुए, उसी तरह यह मोती भी आपका नहीं है, मेरा है ।"

भोलू भाई मुट्ठी बंद करके चिल्लाने लगे, "नहीं, यह मोती मेरा है । मैं तुम लोगोंको ऐसे ही नहीं दूंगा । जाओ, कर लो जो करना हो ।"

रामू, रमेश, रेस्तरांका मालिक भोलू भाईको लेकर उसी समय रेस्तरांके बाहर निकले । उन्होंने इस मामलेमें आठ-दस उच्च कोटिके

kissekahani.com

रामू, रमेश और रेस्तरांका मालिक भोलू भाईको लेकर बाहर निकले

वकीलोंसे राय ली कि मोती किसका है । अधिकतर वकील एक ही निर्णयपर पहुंचे—

क्या निर्णय था वह? बच्चो, अकल दौड़ाओ । इस मामलेमें तुम अपने भाई-बहन, माता-पिता सबकी राय ले सकते हो ।

(बच्चो, ऊपर दी गई पहेलियोंके उत्तर एक पोस्ट कार्डपर लिखकर इस पतेपर भेजो—'भोलूकी भूल-भूलैया नं० १' पराग, पो० बा० नं० २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१। उत्तर जल्दीसे जल्दी भेजो, अधिकसे अधिक २० नवंबर तक हमें मिल जाएं । जो उत्तर 'हमारी पसंद' या 'अटपटे चटपटे' आदि अन्य स्तंभोंके कार्डोंपर आएंगे वे प्रतियोगितामें शामिल नहीं किए जाएंगे । जिन बच्चोंके उत्तर सही होंगे, उनके नाम 'पराग' के जनवरी अंकमें प्रकाशित किए जाएंगे । अगले अंकमें भोलूकी भूल-भुलैया—नं—२ की प्रतीक्षा करो ।)

kissekahani.com

कहानी

दीप-शिखा

उन दिनों गर्मीकी छुट्टियां चल रही थीं। नोनी-पोलीके घरके दरवाजेके ऊपर रोशनदान-में एक चिड़ियाका घोंसला था। घोंसलेमें उसके बच्चे भी थे। जब मां अपने बच्चोंके लिए चुग्गा लाती, तो उनके चहचहानेकी आवाज दूर तक सुनाई पड़ती थी।

एक दिन कबूतरोंने चिड़ियाके एक बच्चे-को नीचे गिरा दिया। बच्चा नीचे बिछे पायदान पर गिरा। वह बहुत छोटा था और मांसका लिजलिजा लोथड़ा-सा लगता था।

नोनी सात सालका था और उसकी बहन पोली चार सालकी थी। नोनीने जब उस बच्चेको देखा, तो वह बड़े गौरसे उसकी हरकतें देखने लगा। पोली पहले तो उस पिलपिलेसे जीवको साक्षात् 'लूलू' समझ उससे डर गई, परंतु बादमें अपने भैयाको बैठे देख वहीं आकर बैठ गई।

तभी अंदरसे मां निकल आईं। वह बोलीं, "छि: छि: यह चिड़ियाका बच्चा कहांसे आन मरा। देख रे, नोनी, इसे छुइयो मत। बिल्कुल मुरदा-सा पड़ा है यह। मुश्किलसे दस मिनट जिएगा।"

हिदायतें देकर मां तो चली गईं, परंतु नोनी-पोली वहीं बैठे रहे। फिर नोनी उठा और उसने डबल रोटीका एक छोटा टुकड़ा पानीमें भिगोकर बच्चेके मुंहमें रख दिया। डबल रोटी गलेसे नीचे उतारनेके लिए उसने पिताजीके स्याही वाल ड्रापरसे थोड़ा-सा पानी भी उसके मुंहमें डाला।

डबल रोटी खाकर चिड़ियाके बच्चेमें कुछ शक्ति आ गई। वह 'चीं चीं' कर ऊपर-नीचे अपनी बेहद पतली गरदन मटकाने लगा।

मां तो अपने काम-धंधेमें चिड़ियाके बच्चेको भूल गई थीं। परंतु नोनी उसे पालने-पोसनेके लिए अपनी अक्ल लड़ा रहा था। वह एक ऐसे डिब्बेकी तलाशमें था जिसकी दीवारें ऊंची हों, और थोड़ा-सा बड़ा होनेपर भी बच्चा उसमेंसे आसानीसे न भाग सके।

सहसा उसे पोलीके जूतोंका डिब्बा याद

आ गया। डिब्बा गत्तका था और उसकी दीवारें काफी ऊंची थीं। परंतु पोलीने उसके ऊपरवाले ढक्कनमें छेदकर उसकी गुल्लक बना ली थी। पोलीसे वह डिब्बा खाली करा लेना नोनीके लिए दुनियाका सबसे कठिन कार्य था।

कुछ देर सोचकर नोनीने पोलीको समझाया: "मैं इस बच्चेको तेरी गुल्लकवाले डिब्बेमें पालूंगा। जब यह बड़ा हो जाएगा और उड़ना सीख जाएगा, तो इसे मैं तुझे दे दूंगा फिर यह तेरे कंधेपर बैठकर मजेसे तुझे 'चीं चीं' वाला मीठा गाना गाकर सुनाया करेगा।

बात पोलीकी समझमें आ गई। उसने झटपट अपने डिब्बेमेंसे पैसे निकालकर एक छोटे

डिब्बेमें रखे और डिब्बा नोनीके हवाले कर दिया।

नोनीने थोड़ी-सी घास इकट्ठी की। घासका उसने डिब्बेमें बिछौना बनाया और गत्तेसे उस बच्चेको उठाकर घासपर रख दिया। फिर डिब्बा उठाकर उसने अपनी पढ़ने वाली मेजपर रख दिया।

अभी चिड़ियाके उस बच्चेकी आरंभिक परिचर्या समाप्त भी न हुई थी कि उस ही पाएदान पर ऊपर रोशनदानमेंसे एक और चिड़ियाका बच्चा आ गिरा। उसकी सांस तो चल रही थी, किंतु पांवकी एक उंगली शरीरके नीचे आनेके कारण मुड़ गई थी। इस कारण वह छटपटा भी रहा था।

नोनीने भीगी डबल रोटी और पानीसे उस बच्चेको भी 'फर्स्ट एड' दी और उसे भी उठाकर उसी डिब्बेमें रख दिया जिसमें उसने पहला बच्चा रखा था।

पोलीको संदेह हुआ कि जब वह बच्चे बड़े हो जाएंगे, तो नोनी लंगड़ी चिड़िया उसे दे देगा। और दूसरी अपने पास रख लेगा। वह नोनीसे बोली, "इसता नाम ता है?"

"चिड़ियाका बच्चा," नोनीने कहा।

"और इस तूती तांगवाले ता?" पोलीने फिर पूछा।

"चिड़ियाका बच्चा," नोनीने वैसे ही सहज भावसे कहा।

स्वतंत्र

पहली चिड़ियाका नाम भी 'चिड़ियाका बच्चा' था और दूसरीका भी। अब पोलीका संदेह पक्का हो चला था। "मुझे नहीं पता। मेरी तिलिया ता नाम अलद रत दो। मैं ये तूती तांग वाला बस्ता बिल्तुल नहीं लूं दी।" उसने टेढ़ी उंगली वाले बच्चेकी ओर इशारा करते हुए मुंह बिचका दिया।

"हां, हम इनके नाम अलग अलग रख लेंगे," नोनी बोला।

"क्या?" पोलीने अपनी तोतली भाषामें बड़ी अधीरतासे पूछा।

नोनीको पिताजीकी एक पुस्तकका ध्यान आया जिसके ऊपर जलते हुए दीपककी बहुत सुंदर रंगीन तस्वीर बनी हुई थी। उसके ऊपर

लिखा था 'दीप-शिखा'। वह बोला, "तुम्हारी चिड़ियाका नाम है दीप और मेरीका शिखा।"

ये सारे काम बच्चोंने मांकी गैर-हाजिरीमें किए थे। जब मांकी दृष्टि उन चिड़ियोंके बच्चों-पर पड़ी, तो वह बहुत नाराज हुई। नाक सिकोड़ती हुई वह मेजसे पीछे हट गई और उन्होंने नोनीको पकड़कर उसके कानोंको अच्छी तरह उमेठा। परंतु वह जानती थीं कि अच्छे-भले चिड़ियाके बच्चोंको घरसे बाहर नहीं फेंका जा सकता। उनको क्रोध इस बातका आ रहा था कि सारा दिन इन दोनों मुसीबतोंके खाने-पीने, सफाई और बिल्लीसे सुरक्षाका ध्यान उन्हें खुद रखना पड़ेगा।

नोनी, पोली और उनके पिताजीके सवेरे उठनेसे पहले ही मां झाड़ू-बुहारी, स्नान और पूजा-पाठ आदिसे निबट जाती थीं। क्योंकि दूसरे कमरेमें रातको सब लोग सोते थे इसलिए मां नोनीकी मेजके निकटवाले कोनेमें बैठकर ही अपना पूजा-पाठ करती थीं।

अगले दिन जब मां पूजा-पाठ करने बैठने लगीं, तो चिड़ियाके बच्चे खटपट सुन 'चीं चीं' करने लगे। जब मां उनके पास गईं, तो उन्होंने देखा कि बच्चोंके नीचे बिछे घासके बिछौनेपर बीट आदिसे बहुत गंदगी हो गई थी। उसपर मच्छर बैठ गए थे और उसमें से दुर्गंध भी आ रही थी। बरबस उन्हें आंगनमें बैठकर पूजा-पाठ करना पड़ा।

जब नोनी उठा, तो मांने उसे केवल बच्चों-के डिब्बेमें सफाईके निर्देश दिए।

नोनी-पोली अपना खेल-कूद छोड़ सारे-दिन दीप-शिखाकी देख-भालमें लगे रहते। नोनी-को कभी दोनों बच्चोंकी सफाईकी चिंता रहती, तो कभी उनके लिए कटोरीमें चावल और बाजरा भिगोनेकी। पोली दीप-शिखाके लिए कोई काम तो नहीं कर पाती थी, परंतु क्योंकि दीप उसकी अपनी चिड़िया थी और शिखा उसके भैयाकी, इसलिए वह अपनी चिड़ियाको हथेलीपर लेकर बैठ जाती और उसे बहुत प्यार करती।

थोड़े दिनोंमें शिखाकी उंगली बहुत कुछ ठीक हो गई। वह भी इधर-उधर फुदकने लगी।

उस दिन जब नोनी-पोलीकी मां नोनीकी मेजके निकट चारपाईपर आकर बैठीं, तो आहट पा दीप-शिखा डिब्बेकी दीवारपर चढ़ आए और 'चीं चीं' कर उनसे चुग्गेकी मांग करने लगे। परंतु मांके कोई उत्तर न देनेपर वे उड़कर उनके पैरोंपर जा बैठे और अपनी मांग दुहराने लगे। मां पहले ही उनसे जली-भुनी बैठी थीं। उन्होंने बच्चोंको झटक कर अलग फेंक दिया।

इससे दीप-शिखाके नन्हे-से दिमागोंमें उड़ने-के साथ साथ लड़ने-भिड़नेकी भी बुद्धि आ गई। जब एकको चुग्गा मिलने लगता, तो दूसरा उसकी चोंच दाब लेता। इसपर पहलेको इतना क्रोध आता कि वह दूसरेके पंखोंपर पिल पड़ता।

उस दिन पिताजी दफ्तरके कामसे चार दिनके लिए बाहर जा रहे थे। नोनी-पोलीकी अभी काफी छुट्टियां शेष थीं इसलिए वह उन्हें भी साथ ले जाना चाहते थे। अतः नोनी-पोली दीप-शिखाको भारी मनसे अकेला छोड़ चले गए।

अब दीप-शिखाकी देख-भाल करने वाला कोई नहीं रह गया था।

एक दिन कमरेका दरवाजा खुला हुआ था। दीप उसमेंसे उड़कर बाहर आंगनमें आ गया। आंगनमें नोनी-पोलीकी मां खाटपर बैठी चावल चुग रही थीं। जहां वह खराब चावल फेंक रही थीं, वहां बहुत सारी चिड़ियां जमा हो गई थीं। दीप उन्हींके बीच जा बैठा। उसके पीछे पीछे शिखा भी आ गई। चिड़ियोंका वह संसार उसे अजूबा-सा

(शेष पृष्ठ ७४ पर)

कबूतर, मोती और फुलझड़ियां

उड़ा कबूतर सर से ऊपर!
आसमान को आए छू कर!
आसमान पर चांद सितारे,
बाट देखते नयन पसारे!
चांद सितारों से बोलेगा,
आज कबूतर मुंह खोलेगा!
मुंह में मोती बहुत भरे हैं,
नीले पीले लाल हरे हैं!
एक एक कर मोती छूटें,
फुलझड़ियां बन बन कर फूटें!
आज गगन में हुई दिवाली,
चोंच कबूतर ने की खाली!

—धीरेन्द्र काश्यप

kissekahani.com

तरह, उनके आज और आने वाले कलपर भी छाए हुए हैं।

इसी लिए मुझे भी सिर्फ नेहरू चाचाकी तस्वीरें जमा करनेका शौक था। एक बार मुझे एक और तस्वीर मिली। वह किसी बहुत बड़े बांधका पहला पत्थर रख रहे थे। मैं हैरान होकर सोचती थी—'अरे, यह नेहरू चाचाको क्या हो गया है? आखिर वह इतनी मेहनतके काम क्यों कर रहे हैं? कहीं देखो तो जमीन खोद रहे हैं, कहीं देखो तो इतने भारी भारी पत्थर उठाकर बड़े बड़े भवन बना रहे हैं। आखिर इन्हें अपने हाथोंसे

बाल दिवस पर

मुस्कराता

सब बच्चोंकी तरह मुझे भी तस्वीरें जमा करनेका शौक था और जिस तरह हर बच्चेके पास हुआ करती हैं, मेरे पास भी ज्यादा तस्वीरें नेहरू चाचाकी थीं।

उनमेंसे एक तस्वीरको देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब होता था, क्योंकि उसमें नेहरू चाचा हाथमें कुदाल लिये सख्त जमीनपर भरपूर वार कर रहे थे। मैंने सोचा—हाय, यह मजदूरोंका काम प्रधान मंत्री क्यों कर रहे हैं? ऐसी कौनसी चीज है जिसे बनानेके लिए वह मजदूरोंका इंतजार भी नहीं कर सकते?

चाचा नेहरूकी कहानी मैं एक छोटीसी किताबमें पढ़ चुकी थी। वह 'आनंद भवन' के राजकुमार थे, बहुत बड़े बापके इकलौते बेटे थे, सारी दुनियाके चहेते नेता थे और हमारे इतने बड़े भारतके प्रधान मंत्री थे। फिर वह कुदाल हाथमें लिये जमीन क्यों खोद रहे थे?

मैं बहुत दिन तक यह बात सोचती रही, क्योंकि पंडितजी हर छोटे बच्चेके 'चाचा' थे। बच्चे उन्हें सपनोंमें देखते, उनकी बातें बड़े ध्यानसे सुनते और बड़ी गर्व-भरी मुद्रामें सीनेपर हाथ रखकर कहते थे—"चाचा नेहरू हमारे हैं!"

फिर जब बच्चे बड़े हो जाते, तो उन्हें मालूम होता कि नेहरू न केवल उनके गुजरे हुए कलकी

क्या चीज बनानेका शौक हुआ है?'

लेकिन वह जो काम कर रहे थे, उसकी किसीको खबर न होने देते थे। लोग तो यह समझते थे कि वह दिन-रात कागजोंपर झुके बैठे रहते हैं। दुनिया भरके लड़ाई-झगड़ोंका समझौता कराते हैं और सारी दुनियामें शांतिका दीप जला रहे हैं। लेकिन मैं समझ गई थी कि वह चुपके चुपके कोई चीज भी बना रहे हैं। जैसे मेरी सहेली गुड्डोने सबसे चोरी-छिपे गुड़ियाका घरौंदा बनाया था। एक दिन वह भी लोगोंको हैरान कर देंगे। लोग सोचेंगे कि उन्होंने तो अपने जीवनका एक एक क्षण भारतवालोंको बांट दिया था, फिर उन्होंने यह चीज कब और कैसे बना ली?

तब मैं तस्वीर दिखाकर कहूंगी कि मैं तो पहले ही यह भेद जान गई थी।

अब मैं बड़े गौरसे उनकी तस्वीरें देखा करती थी। एक बार अखबारमें उनकी नई तस्वीर आई। वह आदिवासियोंके बीचमें बांसुरी लिये नाच रहे थे। हाय रे! यह तो अब खेल-कूदमें पड़ गए—मैंने दिलमें सोचा कि अब शायद वह काम अधूरा ही पड़ा है।

मगर दो-तीन दिनके बाद ही उनकी जो तस्वीर आई, उसमें वह एक नन्हा-सा पौधा लगा रहे थे। यह कौन-सा वृक्ष है? इसमें फल लगेंगे

या फल? मुझे दिन-रात यही चिंता रहने लगी। आखिर नेहरू चाचाको किस चीजकी कमी है, जो वह वृक्ष भी अपने हाथसे लगा रहे हैं।

जब मैं इंतजार करते करते उकता गई, तो एक दिन मैंने चाचा नेहरूको एक पत्र लिखा और सारे घरसे छिपाकर उसे लेटर बक्समें डाल आई। खतको मैंने खूब गोंद और लेई लगाकर बंद किया था कि कोई और न पढ़ ले। मैंने चाचाजीको लिखा था कि मैं उनका भेद जान गई हूं। इसलिए वह मुझसे न छिपाएं और चुपकेसे लिख दें कि वह जमीन क्यों खोद रहे

गुलाब

जीलानी बानो

हैं? कौनसे पौधे लगा रहे हैं?

अब मैं सारे दिन डाकियेका इंतजार करती थी। वह सबके खत लेकर आता था, लेकिन मेरा ही खत न आया। एक बार मैंने उसे रोककर पूछा भी कि प्रधान मंत्रीने उसे मेरे नामका कोई खत नहीं दिया है। मगर वह जवाब देनेकी बजाए हंसता हुआ चला गया।

अब तो नेहरू चाचाकी जितनी तस्वीरें आती थी, उनमें वह कोई काम करते हुए नजर ही न आते थे। वही बेकारके काम—कहीं भाषण दे रहे हैं, किसीसे हाथ मिला रहे हैं, या अपने किसी साथीके कंधेपर हाथ रखे उसे कुछ समझा रहे हैं—भई, यह अपना काम क्यों नहीं करते हैं। इतनी व्यस्ततामें भूल तो नहीं गए कि उन्होंने किसी कामके लिए सख्त जमीनको खोदा था, एक नन्हा-सा पौधा लगाया था।

●

एक शामकी बात है।

मैं अपने कमरेमें बैठी ग्रह-कार्य कर रही थी और अब्बा अपने दोस्त रशीद साहबसे बरामदेमें बातें कर रहे थे। अचानक मैंने सुना, रशीद साहब कह रहे थे—"लेकिन पंडितजीको अपना इतना अहम और जरूरी काम करना है, उनके पास वक्त कहां है?"

मैंने पेंसिल और कापी फेंकी और भागी बरामदेमें। फौरन रशीद चाचाको सलाम करके पूछा—"चचाजान, नेहरू चाचाका सबसे अहम काम क्या है? आजकल वह क्या कर रहे हैं?"

रशीद चाचाने पहले तो बड़े गौरसे मुझे देखा, फिर बड़ी मुहब्बतसे मेरे सिरपर हाथ फेरकर बोले, "मुन्नी रानी, वह तुम्हारे लिए नया हिन्दुस्तान बना रहे हैं।"

"मेरे लिए—!" मैं खुशीसे उछल पड़ी और सोचने लगी कि नया हिन्दुस्तान कैसा होगा। मैं उसे कब देखूंगी?"

"अच्छा, तो क्या वह इसी लिए जमीन खोद रहे थे, पौधे लगा रहे थे?"

मेरी बात सुनकर अब्बा और चचाजान हंस पड़े। फिर अब्बाजानने मुझे हुक्म दिया कि अब मैं ज्यादा बक-बक न करूं और जाकर अपना ग्रह-कार्य कर लूं।

उस दिन खुशीके मारे मुझसे कोई काम नहीं हो रहा था। चाचा नेहरू नया हिन्दुस्तान बना रहे हैं। बेचारे कितनी मेहनतसे हर काम अपने हाथसे कर रहे हैं। जाने नया हिन्दुस्तान कैसा होगा —?

एक दिन मैंने फिर रशीद साहबको अकेला देखा, तो फौरन उनके पास गई।

"चचाजान, नेहरू चाचा नया हिन्दुस्तान कब तक बनाएंगे?"

"बन भी चुका!" उन्होंने बड़े इत्मीनानसे कहा।

"अरे कब—?" मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ।

"वह पंडितजीकी तस्वीर देखो, उसमें नया हिन्दुस्तान नजर आ रहा है।"

मैंने गौरसे देखा। नेहरू चाचाके सीनेपर लगा हुआ लाल गुलाब मुस्करा रहा था। वह खुद भी उसके साथ हंस रहे थे। अच्छा तो यही है नया हिन्दुस्तान—खिलता हुआ—मुस्कराता हुआ—!

फिर मैं सोचने लगी कि इस गुलाबकी खातिर नेहरू चाचाने कितनी मेहनत की है, यह केवल मैं जानती हूं। शायद मेरी उम्रके और बच्चे भी जानते हों कि उन्होंने अपने हाथसे जमीन खोदी है, पौधा लगाया है, जब ही तो मुस्कराते हुए गुलाबको वह हमेशा अपने सीनेसे लगाए रहते थे—।

(उर्दूसे अनुवाद: लक्ष्मीचंद्र गुप्त)

१०८ ए, मुज्जमपुरा, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

—शिवानी

शहरके एक सूखे नालेमें दोनों रहते थे—खोमचेवाला हरकू और उसकी पत्नी दम्मो। नालेकी चारों ओर चार चटाइयोंको बांसके ठट्ठरपर मढ़ ऊपरसे फूसकी छत डाल दी थी हरकूने। वहींपर एक कोनेमें था उसका चूल्हा। उसीको सुबहसे ही सुलगा हरकू नित्य एक ही तरहकी चाट बनाता—आलू-छोले। खूब मसाले डालता, फिर तीखी मिर्चसे लाल-लुभावने बना देता। बस फिर मुठिया बगलमें, सिरपर आलू-छोलेका थाल, उसमें धरी ढिब-ढिब धुआं छोड़ती मिट्टी-तेलकी ढिबरी और हरकू फेरी लगाने निकल जाता और फिर सुरीली आवाजमें हांक लगाता :

"गरम चटपटे छोले!"

जैसी ही तीखी हरकूकी चाट थी वैसी ही तीखी थी उसकी पत्नी दम्मो—काली भुजंग, ऊंचे दांत, भुतनी-सी बाल बिखेरे हवासे लड़ती फिरती। हरकू उठता तो बड़-बड़ाती, चूल्हा सुलगाता तो बड़बड़ाती, आलू-छोले बनाकर तैयार करता तो पहले दोना भर खुद भकोसती और फिर बड़बड़ाने लगती—

चाँद की सैर

kissekahani.com

"पता नहीं कौन खाता है इस मरेकी चाट! बस खटाई और मिरिच—कलेजा भूनके रख देवे हैं मरा!"

हरकू था बेचारा सीधा-सादा और शांत सुभाव-वाला जीव सिर झुकाए थाल मांजता, साफ धुला गमछा कंधेपर डालता, चाट सजाता, लाल-हरी मिर्चें खोसता और चूल्हा लीप-पोतकर फेरीपर निकल जाता।

रातको बेचारा दिन भरका थका-मांदा घर लौटता, तो दम्मो अंटीमें बंधे सब पैसे गिन-गिनकर धरवा लेती। एक तो वह इतना सीधा था कि गाहक उसे वैसे ही मूंडकर रख देते; कोई आठ आनेकी चाट खाकर चवन्नी थमाता, कोई बिना पैसे चुकाए ही उड़न्छू हो जाता, फिर भी ईमानदार हरकू रोटी-दालका खरचा निकाल ही लेता।

एक दिन हरकू फेरीको निकला, तो उसने अपने मनमें सोचा—'क्यों न पहले हनुमान मंदिर धूम आऊं! वहां तो आज मंगलका मेला लगा होगा, खूब बिक्री भी होगी, और महाबीर बाबाके दरसन भी हो जाएंगे—एक पंथ दो काज!'

अपनी सूझपर मन ही मन खुश होता वह मंदिरकी ओर बढ़ गया।

"हे महाराज बजरंग बली, आज मेरा पूरा खोमचा बिक गया और सब गाहकोंने पैसे दे दिए, तो मैं तुम्हें सवा पांच आनेका परसाद चढ़ाऊंगा," उसने मनौती की और लंबे लंबे डग भरता चलने लगा।

मंदिर पहुंचा, तो चबूतरा भीड़से ठसाठस भरा था। कहीं झांझ-मृदंग और मंजीरा खनक रहा था, कहीं हनुमान चालीसाका पाठ चल रहा था। मंत्रमुग्ध-सा हरकू सिरसे थाल उतार, हाथ जोड़, आंखें मूंदकर हनुमानजीकी बड़ी-सी मूर्तिके सामने खड़ा हो गया।

"बच्चा, हम तुझसे बहुत खुश हैं। आज हम तेरी चाट खाएंगे।"—चौंककर हरकूने आंखें खोलीं, तो देखता क्या है कि एक भीमकाय बाबा सामने खड़े हैं, माथेपर त्रिपुंड, रोलीका तिलक और नंगे बदनपर राख ही राख। आंखें ऐसी, जैसे दहकते अंगारे हों।

"अन्नदाता, आपका सेवक हूं!" कांपते हरकूने पूरा थाल उतारकर उनके सामने रख दिया।

बाबाने कमंडलसे पानी लेकर आचमन किया और 'जय शंकर' कहकर जम गए। हरकूको तो जैसे सांप सूंघ गया। कमसे कम चार सेर काबुली चना था और सवा दो सेर आलू। उसमें नित्य आध पाव कश्मीरी मिर्चों-की बुकनी बुरकता था और ऊपरसे पाव भर खटाई।

बाबाजीने थाल गोदीमें धरा, चटनीका पथरौटा उल्टा, मिर्चें कुचलीं और सड़प सड़पकर दाल-भात-सा सान पल भरमें थाल जीभसे मांजकर धर दिया। 'डमक-डमक' दो ऐसी विकराल डकारें लीं बाबाजीने कि दुबला-पतला हरकू छिटककर दूर जा गिरा। फिर अपने पहाड़-से नंगे पेटपर हाथ फेरकर बाबाजी बोले—"वाह बच्चा, बढ़िया चाट बनाए हो तुम, जिस साल हमको कुंभ मेलामें हैजा हुआ और हम प्रयागराजमें रामको प्यारे हुए, उस सालके बाद आज ही इत्ती बढ़िया चाट खाई हमने! वाह, आनंद आ गया!"

थर-थर कांपने लगा हरकू। रामको प्यारे! तो क्या यह सामने बैठे, थालको जीभसे झकझक चमकाने वाले बाबा इस लोकके नहीं हैं?

अंधेरा हो गया था, मंदिरकी आरती निबट गई थी, लोग अपने अपने घरोंको जाने लगे थे। खाली थाल और एक ओर लुढ़की मुढ़ियाको बुतकी तरह देख रहा था हरकू। अचानक कब बाबाजी पीपलके पेड़की एक सूखी डाल पकड़, सर-सर कर किसी सांपकी भांति रेंगते, पीपल-के मोटे तनेमें अदृश्य हो गए, वह समझ ही नहीं पाया।

आज तक उसने भूत-पलेतोंकी कहानियां ही सुनी थीं, पर यहां तो देखते देखते ही उसके खोमचेको रीताकर, फर्रसे उड़ गए थे बाबाजी। बड़ी देर तक ठक-ठक कांपता रहा हरकू।

चारों ओर घना अंधेरा घिर आया था, कभी सांय-सांय हवा चलती, कभी झींगुर बोलते और कभी हवामें हिलता मंदिरका बड़ा-सा घंटा बोलने लगता टन्-टन्-टन्। सामने धरा खोमचेका थाल भी खाली और जेब भी खाली। आज दम्मो जीता नहीं छोड़ेगी। मरे मनसे हरकू घरकी ओर चला। एक कदम आगे रखता, तो दो कदम पीछे। बड़ी मुश्किलसे पैर घसीटता घर पहुंचा, तो दम्मो साक्षात् रणचंडीका रूप धारण किए, हाथमें झाड़ू लिये खड़ी थी।

"कहां था अब तक? निकाल पैसे!" वह गरजी।

हरकू बेचारा क्या निकालता? जेबमें तो एक छदाम भी नहीं था। दम्मोने आव देखा न ताव लगी उसे झाड़ूसे दमादम पीटने—"मरा, पूरा खोमचा ही अकेले कहीं बैठकर भकोस आया है!"

पर जब हरकूने उसे हाथ जोड़कर मनाया और पूरी बात बताई, तो उसने दो झाड़ू और दिये उसकी पीठपर: "अभागे मूरख, साक्षात महाबीरजी रहे होंगे और तू कुछ मांग भी नहीं पाया! कल रामकिसुनके लड़केका दष्टौन है, नेवतेमें जानेको एक साड़ी भी नहीं है, जा मांग ला मेरे लिए साड़ी!"

हरकू वैसे ही बाबाजीकी सूरत याद कर मरा जा रहा था उसपर दम्मोकी झाड़ूने रही-सही कसर निकाल दी थी। पर मरता क्या न करता? न जाता तो क्या दम्मो छोड़ देती? वह तो साथ साथ घूंघट निकालकर चल दी —"तेरा क्या ठिकाना, वहींसे लौटकर झूठमूठ कह देगा, बाबाजी नहीं मिले!"

पीपल तले दोनों पहुंचे, तो हरकू आंखें मूंदे हाथ बांधे खड़ा हो गया। अचानक चर्रसे डाल चरमराई और धमाक-धम्मसे बाबाजी कूदकर सामने खड़े हो गए —"क्या है रे! क्यों आया इतनी रात?"

हरकूकी तो बोलती बंद हो गई। बेचारा घिघियाने लगा—"म्...म् म् म्...!" पर पीछेसे दम्मोने घूंघट हटाकर, जोरसे चिमटी काटी और फुसफुसाई—"मरे, मांग रेशमी साड़ी!"

"महाराज!" हरकूका बोल फूटा, "घरवाली कहती है कल रामकिसुनके लड़के का दष्टौन है—एक रेशमी साड़ी चाहिए!"

"जा भाग!" बाबा गरजे, "साड़ी धरी है!" और सर्र-सर्र सांपसे रेंगते पीपलमें अदृश्य हो गए। जिंदगीमें पहली बार दम्मोकी कतरनी-सी जीभ जैसे किसीने खींचकर जड़से निकाल दी थी।

दोनों घर पहुंचे, तो सचमुच ही एक लाल रेशमी साड़ी आलेपर धरी थी—चौड़ा सुनहला किनारा, गोटेदार जालीका काम और रुपहले सितारे। दम्मो पहले तो मारे खुशीके उछल पड़ी, पर अचानक उसने हाथकी साड़ी दूर पटक दी और मुंह लटकाकर बैठ गई।

हरकू हैरान था। औरत है कि बला! कहां तो 'साड़ी साड़ी' कर मरी जा रही थी और अब साड़ी मिली, तो दूर पटक दी।

"क्यों क्या हुआ, री?" उसने कहा। "कल यह साड़ी

पहनकर नेवतेमें जाएगी, तो सब जल-भुनकर रह जाएंगे।"

"तू अपनी दादीको ले जइयो यह साड़ी पहनाके!" वह भुनभुनाई। "भला बिना गहनोंके खाक अच्छी लगेगी यह साड़ी! जा मांग ला मेरे लिए गहने!"

हरकू बेचारा फिर भागा। आधी रात, वही सांय-सांयकर चलती हवा, हवामें बजता घंटा और झन-झन करते झींगुर। डाल चरमराई, बाबाजी कूदे और फिर गरजे—"क्यों आया है रे, इतनी रात?"

"महाराज!" कांपते गलेसे हरकू मिनमिनाया, "घरवाली कहती है गहने नहीं हैं, नेवतेमें कैसे जाएगी?"

"जा भाग गहने भी आ जाएंगे!" और सर्र-से रेंगते बाबाजी फिर अलोप हो गए।

हरकू घर पहुंचा, तो लाल साड़ीका घूंघट काढ़े, छमछम पायल बजाती, साड़ी, अंकन-कंकन, हमेल, बाजूबंद चमकाती दम्मोने मुस्कराकर सांकल खोल दी और घूंघट काढ़कर खड़ी हो गई। हरकू हड़बड़ाकर लौटने ही लगा था —"बाप रे बाप! किसी रानीके महलमें तो नहीं घुस आया भूलेसे!"

"अरे मर नातपीटे!" दम्मोने हंसकर कहा, "क्या अपनी घरवालीको भी नहीं पहचानता? यह तो मैं हूं तेरी दम्मो!"

दूसरे दिन दम्मो नेवतेमें जानेको सज-धजकर निकली, तो लगा किसी जौहरीकी दुकान ही उठकर चली जा रही है। क्या चंदनहार था! रंगीन मीनाका काम और असली हीरा पुखराज नीलम! फटे गलेसे खूब सोहर गा, ढोलक-

पीट-पाटकर दम्मो लौटी, तो हरकू सो रहा था। छमछम सुनकर वह उठ बैठा। पर यह क्या? एक एक गहनेको खोल खोलकर दम्मो, उसपर चांदमारी-सी करने लगी। कभी ठुमसे पायलका एक जोड़ा उसके माथेपर गिरता और कभी झमसे हाथके कड़े।

"क्या हो गया, री? बौरा गई है क्या इतने गहने पाकर?" हरकूने कहा। "इस गहनेकी मारसे तो तेरी झाड़ूकी मार ही अच्छी थी!"

"बौराऊं नहीं, तो क्या करूं?" दांत पीसकर कर्कशा दम्मोने कहा, "नेवतेमें सब औरतें कहने लगीं—ऐसी साड़ी और ऐसा गहना पहनकर आएगी, तो अपने फूस हीके टप्परमें! जा भागकर बाबाजीसे मेरे लिए पक्का मकान मांग ला, नहीं तो मैं इन्हीं गहनोंसे तेरा भेजा तोड़कर रख दूंगी!"

हरकू दम्मोको खूब जानता था, जो कहती थी वह करके रहती थी। बेचारा फिर भागा भागा गया और पीपल तले आंखें मूंद, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। चर्र-कर डाल चरमराई और बाबाजी प्रकट हो गए।

"क्या है, रे? क्यों आया इतनी रात?"

"महाराज!" हरकू पढ़ाए तोते-सा बोल उठा, "घरवाली पक्का मकान मांगती है!"

"जा जा," रेंगते बाबाजी कहते गए, "बन गया है मकान!"

इतनी जल्दी मकान बन गया? पर हरकू टप्पर-के पास पहुंचा, तो पत्थरकी मूरत बन गया। कहां पत्थर और कहां फूसकी छत। बढ़िया नया चमकता मकान सामने खड़ा था।

"अरे वाह रे मेरे बाबाजी!" उसने कहा, "जितना खाया उसका बीस गुना चुकाया!"

यही नहीं सामने नए तारमें मढ़ी मुढ़िया थी और स्टीलका चमकता थाल। हरकू तो बौरा गया। कभी किवाड़को छूता, कभी पलंगके गुदगुदे गद्देपर लेट जाता, कभी नए बक्सेसे निकालकर नया अंगरखा पहनता, कभी सफेद टोपीको तिरछीकर बालोंपर टिका लेता।

"अरे, तू तो मेरा एकदम मंत्री लगै है!" हंसकर दम्मो कहती।

सचमुच ही सफेद टोपी, हरकूके घुंघराले बालोंपर बढ़िया फबती थी। बड़ा-सा आईना भी रखवा दिया था बाबाजीने, पर उससे तो दम्मो ही चिपकी रहती। कभी लाल चूनर पहन लेती, तो लगता कोयलेकी कोठरीमें आग लग गई है। कभी हरी चूड़ियां पहनती कभी लाल, कभी कानमें बालियां लटकाती कभी झूमके। कभी बड़ी-सी टिकुली लगाती, कभी ओठोंमें लाली। कुछ भी तो रखना नहीं भूले थे बाबाजी।

दो दिन तो दम्मो खूब खुश रही, तीसरे दिन उसने फिर मुंह हांडी बना लिया। "ऐसे मकानसे निकलकर, रिक्शा-इक्केमें बैठना क्या खाक अच्छा लगता है? जा बाबाजीसे आज ही एक बढ़िया मोटर मांग ला। फिर हम-तुम भी संझाको वैसे ही घूमने जाया करेंगे जैसे बगलकी कोठीके साहब, मेमसाहब जाते हैं। एक झबरा कुत्ता भी मांगना और एक बड़ा-सा बटुआ, जैसा बगलकी मेमसाहब लटकाती है, समझा?"

हरकू न समझकर क्या इस मकानमें रह सकता था? भागा फिर। फिर डाल चरमराई, फिर बाबाजी कूदे और गरजे—"क्यों रे, हरकुआ, क्यों आया इतनी रात?"

"महाराज! घरवाली कहती है मोटर चाहिए!"

बाबाजीने कुछ नहीं कहा, बस रेंगते तनेमें छिप गए।

हरकूका दिल डूब गया, हो न हो आज बाबाजी रूठ गए हैं, तब ही तो कुछ नहीं बोले। कहीं सब छीनछान न लें। डरता डरता हरकू घर पहुंचा, तो बढ़िया नीली वर्दीमें, साहबसे दिख रहे ड्राइवरने एक सैल्यूट लगाई। घबड़ाकर हरकू दो कदम पीछे हट गया।

"अरे, यह तो हमारा नया ड्राइवर है!" दम्मोने उसके कानमें कहा, "सलामी दे रहा है तुझे और तू मरा औंधा गिरा जा रहा है!"

(शेष पृष्ठ ७३ पर)

चीन का हमला

बहुत पुरानी बात है। तब चीनमें एक क्रूर राजा-का राज्य था। उसने अपना राज्य बढ़ाना आरंभ कर दिया। तब लोग शांति-प्रिय थे और व्यर्थका खून-खराबा पसंद नहीं करते थे। इसी कारण चीनके आसपासके देशोंमें सेनामें अधिक लोग नहीं थे।

चीनके राजाने अपने सैनिकोंको आदेश दे दिया था कि चारों ओर मारकाट करते हुए बढ़ते चले जाएं। इस प्रकार आसपासके सारे राज्योंमें आतंक छा गया। जिस ओर उसकी सेना जाती, वहांके राजा अपनी हार मान लेते। बदलेमें वे अपनी सेनाके सिपाही और भेंटमें बहुमूल्य वस्तुएं देते।

इस प्रकार चीनके राजाकी फौज बढ़ती गई। इसी बीच उस राजाको खबर मिली कि हिन्दुस्तानमें कलिंगके राजाने उसकी अधीनता माननेसे साफ इनकार कर दिया है। उसे क्रोध चढ़ आया। उसने अपने अधीन सब राजाओंको आदेश दिया कि वे सब सेनाके लिए सैनिक दें जिन्हें लेकर वह हिन्दुस्तानपर हमला कर सके।

इससे इतने सैनिक इकट्ठे हो गए कि उनकी गिनती करनी भी कठिन हो गई। संसारके इतिहासमें इतनी बड़ी संख्यामें सैनिक शायद ही एकत्र हुए हों। उन सैनिकोंकी संख्या इतनी अधिक थी कि जब वे चलते थे, तो लगता था कि भूचाल आ रहा है। हरियालीको रौंदती, नदी नालोंको पार करती हुई वह विशाल सेना तामसेक पहुंच गई, जिसे आज सिंगापुरके नामसे जाना जाता है।

यहां पहुंचकर चीनके राजाने अपने दूतोंसे हिन्दुस्तानके विषयमें जानकारी प्राप्त करनेको कहा। तब तक उसे पता नहीं था कि हिन्दुस्तान किस ओर पड़ता है और कितनी दूर है। एक ओर तो जहाज बनने आरंभ

kissekahani.com

हो गए जिनमें लदकर वे सैनिक, उनके अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य सामान जाने थे और उधर राजाके दूत हिन्दुस्तानके विषयमें जानकारी एकत्र करने दौड़ पड़े।

इसी बीच हिन्दुस्तानमें कलिंगके राजाको इस आक्रमणकी सूचना मिल चुकी थी। हिन्दुस्तानमें सब प्रदेश अलग अलग राजाओं द्वारा शासित थे। उनमें आपसमें युद्ध होते रहते थे। वे एक बड़े शत्रुके आक्रमणकी बात सुनकर भी अपनी सेनाएं एकत्र करनेको तैयार नहीं थे। सबसे शक्तिशाली कलिंगके राजा ही थे और चीनी सेनाका आक्रमण सबसे पहले उन्हींपर होना था, इसलिए अन्य राजा लोग प्रसन्न थे कि कलिंगके राजाकी हार होगी। उनके तुच्छ मस्तिष्कोंमें यह बात नहीं आई कि उसके पश्चात् उन सबकी बारी भी आएगी और सारे लहलहाते खेत बंजर हो जाएंगे।

जब कलिंगके राजाने देखा कि कोई चारा नहीं है, तो उसने अपने राज्यके बुद्धिमान व्यक्तियोंको बुलाया और उन्हें सारी स्थिति समझाते हुए कहा, "युद्ध हमेशा सैनिक बलसे ही नहीं जीते जाते, सो आप ही कोई उपाय सोचिए।"

सारे बुद्धिमान एक साथ बैठे और कई दिनोंके सोच-विचारके पश्चात् उन्होंने अपना निर्णय दिया। वह कलिंगके राजाको भी पसंद आया और उसे तुरंत कार्यान्वित किया गया।

आशा रानी

इस निर्णयके थोड़े दिन बाद ही एक जहाज तामसेक पहुंचा और वहां यह समाचार फैल गया कि हिन्दुस्तानसे एक जहाज आया है। चीनके राजाके दूतोंने उस जहाजके लोगोंको पकड़ा और अपने राजाके सम्मुख उपस्थित किया।

राजाने गर्जना की: "तुम हमें हिन्दुस्तान जानेकी सही दिशा बताओ, तो तुम्हें इनाम मिलेगा वरना तुम्हारी गर्दन धड़से अलग कर दी जाएगी।"

उस जहाजपर आए हुए सारे यात्री बहुत वृद्ध थे। उनमें कोई भी साठ वर्षकी आयुसे कम था ही नहीं। सबके बाल सफेद और दांत टूटकर गिर चुके थे। उनमेंसे एकने कहा, "महाराज, हिन्दुस्तानकी दिशा बतानेमें हमें क्या एतराज हो सकता है। हमारे सिर आप अलग करें या न करें, इसमें अब हमें कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि इस जीवनमें तो हम अपनी मातृभूमि कभी देख ही नहीं सकते," इतना कहकर वे सारे रोने लगे।

राजा चकराया। पूछनेपर उन्होंने बताया, "हिन्दुस्तान यहांसे बहुत दूर है। हम सब युवक थे जब हमारे मनमें तामसेक देखनेकी इच्छा जागृत हुई थी। हम यहां पहुंचते पहुंचते इतने बूढ़े हो चुके हैं कि हमारे बाल सफेद हो गए हैं, हमारे दांत गिर चुके हैं, हमारी दृष्टि कमजोर पड़ गई है। हममें से आधेसे अधिक व्यक्ति तो रास्तेमें ही मर गए हैं।"

साथ लाए थैलोंमेंसे पके फल निकालकर दिखाते हुए बोले, "यह देखिए इस फलके बीज लेकर हम हिन्दुस्तानसे चले थे। रास्तेमें वे बीज पूरे वृक्षके रूपमें फले और उनके फल भी निकल आए हैं!"

फिर थैलेमेंसे ही सुइयां निकालकर दिखाईं और बताया, "हम लोहेकी छड़ें लेकर व्यापार करने निकले थे जिनपर समुद्रके खारे पानीका इतने वर्षोंका यह असर हुआ कि यह सब मात्र सूइयां रह गई हैं!"

राजाने उन्हें अपने जहाजपर वापस भेज दिया और अपने वजीरोंको सलाह करनेके लिए अलग ले गया। राजाने कहा, "अगर हिन्दुस्तान इतनी दूर है, तो जाना बेकार है। रास्तेमें हमारी सेनाके अधिकांश सैनिक वृद्ध होकर मर जाएंगे। और जो जीवित भी रहे, वे अपने राज्यमें लौटनेसे पूर्व तो अवश्य ही मर जाएंगे। इसलिए हमारी सेनाको आज्ञा दो कि वापस लौट चले।"

सबने राजाकी हां में हां मिलाई और इस प्रकार कलिंगके राजाके उन बुद्धिमान व्यक्तियोंकी सलाहके कारण हिन्दुस्तानपर वह आक्रमण टल गया। उन्होंने ही तो राजाको यह राय दी थी कि एक जहाजपर सुइयां, पके फल एवं साठ वर्षके ऊपरके वृद्धोंको लादकर उस जहाजको तामसेक भेजा जाए। ●

द्वारा श्री ब्रह्मदेव, पो. बा. ६६, ऐसले हाल, देहरादून।

खूब मनेगी दीवाली

रूठ गए चंदा मामा,
मचा शहर में हंगामा!

चुपके से घर से निकले;
किस कोने में गए चले?

वह कोठा चांदी वाला,
जिस पर आज लगा ताला,

उन पर उसकी ताली है;
रात इसलिए काली है!

टुकुर-टुकुर सारे तारे,
देख रहे हैं बेचारे!

तारों में जो वीर बड़े,
उन्हें खोजने निकल पड़े!

दौड़े जैसे तीर चले,
या गन से गोली निकले!

"ढूंढ़ लिया, जी ढूंढ़ लिया!"
नन्हा-सा कह उठा दिया—

"मामा पहुंचे अमरीका,
नगर छोड़ कर दिल्ली का;

अब तो खुशी मनाओ जी,
खूब मिठाई खाओ जी!

रात रहेगी क्यों काली?
खूब मनेगी दीवाली!"

—सीताराम गुप्त

बंगाली कहानी

राजा का मुकुट

kissekahani.com

राजाका मुकुट खो गया, बहुत अनर्थ हो गया; ऐसा अनर्थ कि अगर मुकुट नहीं मिला, तो पता नहीं कि किसका सिर रहे, किसका सिर न रहे।

बात यह है कि राजाके लिए मुकुट बहुत जरूरी है। क्योंकि अगर मुकुट नहीं रहा, तो राजा किस कामका। फिर तो राजा साधारण आदमी लगेगा। मुकुटपर जाने कितने जड़ाऊ पत्थर हैं, वे ऐसे चमकते हैं कि आंखें चौंधिया जाती हैं।

यों तो राजाके पास दो मुकुट हैं, पर इससे क्या? एक मुकुट जाड़ोंके लिए है दूसरा गर्मियोंके लिए। गर्मियोंवाले मुकुटपर भी बहुत पत्थर जड़े हुए हैं, पर वह कुछ हल्का-फुल्का है यानी गर्मीवाला मुकुट जाड़ोंके मुकुटसे जरा हल्का है। जाड़ोंवाला मुकुट भारी भी है और उसमें काम भी ज्यादा है। पर दोनों बहुत कीमती हैं।

गर्मियोंके दिन थे। राजा बागमें घूमने गए थे। अकेले थे, कोई उनके साथ नहीं था।

मूल: इंदिरा देवी

अनु: मनोरमा शर्मा

कभी कभी राजा इस तरह घूमने जाया करते थे। पहरेदार दूर रहते थे। वे दिखाई नहीं पड़ते थे। गर्मियोंके दिन थे, इसलिए राजाने कहींपर मुकुट उतारकर रख दिया और उसी तरह टहलते राजमहलमें लौट आए। उन्हें याद नहीं रहा कि मुकुट बागमें डाल दिया है, न उन्हें खयाल रहा और न पहरेदारोंने कुछ खयाल किया।

चारों तरफ दौड़-धूप होने लगी। भगदड़ मच गई। हर कोई चाहता था कि मैं ही खोज निकालूं ताकि मुझे इनाम मिले। राजा खोज रहे थे, रानी खोज रही थीं, नौकर-चाकर भी खोज रहे थे। यहां तक कि बाहरके लोग भी खोज रहे थे। गोकि उनको भीतर आनेका आदेश नहीं था।

पहले तो बड़ा उत्साह रहा, पर जब बहुत खोजनेपर भी मुकुटका कोई पता नहीं लगा, तो चारों तरफ डर छा गया कि पता नहीं मुकुट कहां गया। किसके यहां निकले? क्या कोई चोर आया? चोर नहीं आया, तो गया कहां?

पर मुकुटका पता नहीं ही लगा। तब रानीने डरते डरते राजासे पूछा—"यह तो बताइए कि आपने अंतिम बार मुकुट कहां देखा।"

राजाने सोचकर कहा, "मैंने दोपहरके समय दरबारमें मुकुट पहन रखा था। फिर तबियत आ गई, तो बागकी ओर निकल गया। अच्छा, याद आ गया। मैंने बागमें ही मुकुट उतारकर रखा था।"

रानी बोली—"बस तो फिर वहीं होगा। मैं भी यह कह रही थी कि कल जब आप भीतर महलमें आए, तो आपके सिरपर मुकुट नहीं था।"

राजा बोला—"सब दरबारियोंको बता दो कि मैंने कहां मुकुट खोया। मैं बागमें टहल रहा था कि गर्मी लगी और सुंदर झाऊके पेड़के नीचे मुकुट रख दिया। अब मुकुट मिल जाना चाहिए। न मिलेगा, तो बड़ी आफत होगी। मैं राजसभामें नहीं जाऊंगा।"

रानी बोली—"खैर, ऐसी बात नहीं है। आपका दूसरा मुकुट है। इस बीचमें वे लोग खोजें और आप दूसरा मुकुट सिरपर रखकर राजसभामें दरबार करें।"

राजा बोला—"नहीं नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। जाड़ोंका मुकुट क्या गर्मियोंमें पहना जा सकता है? हमारे वंशमें यह नियम नहीं है। दरबार भले ही बंद रहे, पर जाड़ोंका मुकुट पहने गर्मियोंमें हर बार जाकर मैं अपनी हेठी नहीं कराना चाहता।"

रानी क्या कहती, चुप हो गई। खोज शुरू हो गई। फिर भी मुकुट नहीं मिला। जहां राजाने बताया वहां चारों तरफ, यहां तक कि बागके हर पेड़-पौधेके नीचे और ऊपर अच्छी तरह खोजा गया, पर कहीं भी मुकुट नहीं मिला।

अब सब लोग डरे कि राजाने बता दिया कि मैंने फलानी जगहपर मुकुट रखा है, अगर वहां मुकुट नहीं मिला, तो इसके माने यह हुए कि पहरेदारोंमें कोई चोर है, दरबारियोंमें कोई चोर है। फिर यहींपर बात खत्म नहीं होती। जिसने चुराया होगा, वह उसे यों तो ले नहीं जा सकता। जरूर किसीसे मिलकर ले गया होगा। पर आश्चर्य है कि राजाके सब पहरेदार पुराने हैं और दरबारी

हमारी पसंद
प्रतियोगिता नं. ८ का परिणाम

हमारी पसंद नं. ८ की प्रतियोगिताके अंतर्गत 'पराग' के अगस्त अंकमें प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन-कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। सर्वशुद्ध हल किसी भी प्रतियोगीका नहीं निकला। जिन ४ बच्चोंकी पसंदका क्रम श्रेष्ठ कहानियोंके बहुमतसे मेल खाता हुआ निकला, उनके नाम और पते नीचे दिए जा रहे हैं; शीघ्र ही उन्हें बढ़िया बढ़िया पुरस्कार भेजे जाएंगे :

१– शेखर नलिन, द्वारा श्री मदनकिशोर, मैनेजर, बिहार सिलिका माइन्स, अजीजघाट, बिहार शरीफ, पटना (बिहार)।

२– सुरेन्द्रपालसिंह, द्वारा श्री जसवन्तसिंह, एम. बी. नं. २, विश्रोरी रोड, भोपाल (म. प्र.)।

३– प्रकाशचंद्र अग्निहोत्री, द्वारा श्री एच. एन. अग्निहोत्री, बंगला नं. ४१, कैन्टूनमेन्ट, शनीचरी, सागर (म. प्र.)।

४– सुनीतासिंह, द्वारा श्री आनन्ददेवसिंह, २६५ कटरा, बांदा (उ. प्र.)।

सही हलवाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है :

१– आलसियों का उस्ताद आह फुन, २– हड़ताल, ३– चोर की अद्भुत यात्रा, ४– गुलाब का फूल, ५– पीले मुख की रोशनी, ६– मूर्खों का नगर, ७– हिममानव को चाकलेट, ८– एक शलगम की कहानी, ९– खटपटखां का हिसाब।

भी राजभक्त हैं। तभी किसीको सूझ गया कि हो न हो यह खरगोशकी बदमाशी हो कि उसने मुकुट चुरा लिया और जमीनके अंदर ले गया।

राजाने पूछा— "तुमने कैसे जाना?"

"महाराज, उस दिन बहुत पानी बरसा था। सिवाय खरगोशके किसीके वशका नहीं था कि इतना बड़ा मुकुट ले जाए। वह जरूर मिट्टी काटकर उसे अपने घर ले गया होगा। मुझे ऐसा लगता है कि खरगोशके महलकी तलाशी ली जाए, तो मुकुट मिल सकता है।"

राजाने कहा—"अच्छी बात है, यही करो।"

नौकर-चाकर, पहरेदार—सब दौड़े पड़े। ढूंढ़ते ढूंढ़ते बागके बहुत बड़े पेड़के नीचे एक गड्ढा दिखाई पड़ा। उस गड्ढेको बड़ा करके दरबारियोंने खरगोशका घर ढूंढ़ निकाला। देखा कि खरगोशने तो पूरा महल बना रखा है और बड़ा शौकीन है।

बहुत दूर जाकर तब खरगोशका घर मिला। वह तो पूरा महल था। तब खरगोशोंका राजा अपनी रानी तथा बच्चोंके साथ मेजपर बैठकर चाय पी रहा था। लड़के आपसमें कुछ तकरार कर रहे थे और खरगोशोंकी रानी उन्हें सम्हाल रही थी।

चाय पीते पीते सभीने देखा कि दो अजनबी आए हैं। खरगोशोंकी रानी खड़ी हो गई और बच्चोंने चिल्ल-पों बंद कर दी। खरगोशोंका राजा तो समझ गया कि मामला क्या है। उसने आंख पिटपिटाते हुए कहा—"आप लोग क्या चाहते हैं?"

वे बोले—"राजाका मुकुट खो गया है इसलिए हम आए हैं। हम इस महलकी तलाशी लेंगे।'

सुनते ही खरगोशोंके सारे बच्चे जिसे जिधर बना, उधर भाग गए। रानी रसोईघरकी तरफ चली और खरगोशके राजा बोले—"खोजिए साहब!"

बहुत खोज-खाजके बाद मुकुट खरगोशोंके राजाके तकिएके नीचेसे निकला। किसीने खरगोशकी तरफ नहीं देखा। सब मुकुट लेकर भागे कि मुझे ही इनाम मिले। जब चले गए, तो खरगोशोंकी रानीने कहा—"मैंने कहा था कि इस तरह गड़बड़ी मत करो। पर तुम नहीं माने। हम लोगोंको मुकुटसे क्या मतलब, पर तुमने कहा—ऐसा एक मुकुट घरमें रहे, तो खरगोशोंमें

इज्जत बढ़ेगी। अब सम्हालो।"

खरगोशोंके राजा डर तो गए ही थे। बोले—"मुझे क्या पता था कि यह राजाका मुकुट है। मैंने तो एक चीज पड़ी पाई और उसे मैं ले आया। मैं क्या जानता था कि इसके पीछे इतनी बातें हैं।"

तब खरगोशोंकी रानीने कहा—"अब देखें क्या होता है?"

हुआ भी यही। थोड़ी देर बाद राजाके वही नौकर आकर खरगोशोंके राजाको पकड़ ले गए। दरबारमें सारे दरबारी इकट्ठे थे। राजाके सिरपर वही मुकुट था जो खो गया था। मुकुट कीमती पत्थरोंसे चारों तरफ चमक रहा था। राजाने खरगोशोंके राजासे पूछा—"क्यों जी खरगोश, तुमने मेरा मुकुट क्यों चुराया?"

खरगोश चुप रहा।

"चुप क्यों हो, जवाब दो?"

"महाराज मैं समझ नहीं पाया कि यह आपका मुकुट है। मैं तो यह समझा कि कोई खिलौना है!"

तब राजाके कर्मचारी चिल्ला उठे—"तुम समझ नहीं पाए? जरूर तुम जानते होगे कि यह

बहुत-सी सुन्दर युवतियाँ पेप्सोडेण्ट टूथपेस्ट ही क्यों इस्तेमाल करती हैं?

जो युवती पेप्सोडेण्ट इस्तेमाल करती है उसे मुस्कराने में ज़रा भी संकोच नहीं होता . . . बल्कि वह तो दिल खोल कर हँस सकती है, हँसी-मज़ाक़ में बेझिझक शरीक हो सकती है।

इसका कारण यह है कि पेप्सोडेण्ट से दाँत चमकदार सफ़ेद हो जाते हैं। इससे आपकी मुस्कराहट में एक अजीब दिलकशी पैदा हो जाती है — और यों महसूस होने लगता है मानो आपके मुँह में दाँतों के बदले मोतियों की लड़ी है!

पेप्सोडेण्ट में मिला इरिडम प्लस चमत्कारी झाग पैदा करता है — जो दाँतों पर जमी मैली परत को हटाकर दाँतों को चमकदार सफ़ेद बनाता है!

पेप्सोडेण्ट है टूथपेस्ट शानदार . . . दाँतों को बनाता सफ़ेद चमकदार!

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HDL-5836

राज-मुकुट है । महाराज, आप हमको आदेश दीजिए, हम इसे फौरन फांसीपर चढ़ा देते हैं।"

पर राजा किसीको फांसी देना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने सोचा, इसे पाताल क्यों न भेज दिया जाए। वहीं यह ठीक होगा। यही सबसे बड़ी सजा है। राजाने किसीकी तरफ नहीं देखा और बोले— "फांसीपर मत चढ़ाओ, इसे मिट्टीके नीचे दफन कर दो। तब इसे मालूम होगा कि चोरी क्या बला है।"

दरबारी सब एक-दूसरेका मुंह ताकने लगे कि यह कैसी सजा हुई। खरगोशको मिट्टीमें दफन करनेका मतलब यह हुआ कि कोई सजा नहीं दी गई। वहांसे तो वह सुरंग बनाकर अपने घर पहुंच जाएगा। फिर यह क्या सजा हुई?

राजाने देखा कि कोई कुछ कर नहीं रहा है। तब चिल्लाकर बोले—"जाओ जाओ, खरगोशको ले जाओ। जरा भी देर मत करो।"

दरबारियोंको बात पसंद नहीं आई और पाताल-वातालकी बात उन्हें गड़बड़ लगी। उन्होंने खरगोशको ले जाकर बागमें छोड़ दिया। कहा— "साले, तुम्हारी पांचों उंगली घीमें रहीं। राजाने तुमको यह सजा क्या दी, तुम्हारे लिए यह वरदान हो गई!"

खरगोश बिना किसी तरफ देखे मिट्टी खोदने लगा और कुछ देरमें ही गायब हो गया।

खरगोशोंकी रानी बड़ी दुखी होकर बैठी थी। इतनेमें खरगोशोंके राजा पहुंच गए। बोले— "सुना, रानी, मेरे लिए यह सजा हुई कि मैं अब मिट्टीके नीचे ही रहूं। कभी ऊपर न जाऊं। राजाने यह नहीं सोचा कि मिट्टीके नीचे मैं अच्छी तरह रहूंगा।"

तब खरगोशोंकी रानीने हाथ जोड़कर ईश्वरको नमस्कार करते हुए कहा—"हे भगवान, ईश्वर-अल्ला, तुमने खूब बचाया। खैर तुम बचे इस कारण कि तुम जानते नहीं थे कि राजाका मुकुट है। तुमने सोचा था कि पड़ा मिला। फिर भी पराई चीज नहीं लेनी चाहिए। इसलिए तुमको इस तरह परेशानी हुई और तुमको कष्ट मिला। माताजी कहा करती थीं कि पराये मालपर कभी लोभ नहीं करना चाहिए।"

खरगोशने अपना कान उमेठते हुए कहा— "मैंने बिना जाने किया था, अब फिर कभी ऐसा काम नहीं करूंगा।" ●

बोलने वाली बिल्ली (पृष्ठ ९ से आगे)

होकर बुढ़ियाने उसपर सूतकी चींचली फेंककर मारी। "तेरी जबानको क्या हो गया, मिनको?" वह बोली, "जब मुझे तेरी सलाहकी जरूरत पड़ती है, तो तू गूंगी हो जाती है, ऐं!"

लेकिन बिल्लियां बोला करतीं, तो वह भी बोलती। उसी समय सेवाराम भीतर आया और प्रसन्नतासे बोला, "कितना अच्छा आदमी है यह! ऐसा किसान सारे गांवमें मिलना मुश्किल है!"

"तू उसके साथ जा रहा है क्या?" बुढ़ियाने सेवारामसे पूछा। उसकी समझमें कुछ नहीं आ रहा था कि उसे जाने दे या रोक ले। अगर बिल्ली ऐन मौके पर गूंगी न हो जाती, तो वह कुछ कहती भी। "यह तो बड़ा भारी चक्कर हो गया!" सेवाराम बोला। "अगर फसलकी कटाईपर गया, तो साल भरके लिए अनाज मिल जाएगा। मगर मैं जाड़ेमें मरता रहूंगा और बैलकी तरह काम करना पड़ेगा। यहां रहूंगा, तो आराम तो रहेगा— पर . . . ."

"मगर यह आवाज फेंकने और भूतिया-मसानवाली बात क्या है?" बुढ़ियाने उससे पूछा। वह चकित होकर बोला, "क्या? क्या धनीराम कहता था?"

"हां, वही कहता था," बुढ़ियाने कहा।

"हा हा हा हा हा!" ठहाका लगाता हुआ सेवाराम बोला, "धनीराम जैसा मसखरा भी मिलना मुश्किल है! अगर तुझे यकीन नहीं आता, तो मिनकोसे पूछ देख। वह क्या झूठ बोलेगी? क्यों, मिनको, क्या मैं आवाज फेंक सकता हूं?"

"कैसी बेहदा बात है!" मिनकोने तुरंत उत्तर दिया, "भला किसीने सुनी है ऐसी बात कभी?" बुढ़ियाने भी मिनकोकी हां-में-हां मिलाई।

इस तरह सेवाराम वहीं सेवा करता रह गया। धनीराम चला गया। लेकिन सेवाराम था खूब मेहनती, इसी लिए तो टिमको बुढ़िया मिनको बिल्लीकी बात मानकर हमेशा सेवारामकी सेवा करती रही!

(प्रस्तुतकर्ता : डी. के. जैन)

kissekahani.com

खिलौनों का डिब्बा

चूहे से डरने वाला हाथी

— अरुणकुमार

बच्चो, डरना मत। तुम जो हाथी बनाने जा रहे हो, वह चूहेसे डरता है। उसे इस तरह बनाओ :

सामनेके पृष्ठपर दिए हुए बड़े चित्र नं. १ का पूरा चौखटा 'पराग' पर से काट लो। उसी पृष्ठपर नीचे दिए हुए छोटे चित्र नं. २ को भी काट लो।

दोनों चित्रोंको पोस्ट कार्ड जैसे मोटे कागज-पर लेई या गोंदसे, सफाईके साथ अलग अलग चिपका लो और सूखनेके लिए किताबोंमें दबा दो। सूखनेपर फालतू कागज (चौखटोंके बाहर यदि रह गया हो तो) काट डालो।

बड़े चित्र नं. १ पर अ, ब, स, द रेखाओंको—जो दानेदार हैं—ब्लेड या तेज चाकूसे चीरे लगाओ और छोटे चित्र नं. २ की अ रेखाको पीछेकी ओर मोड़ दो।

अब छोटे चित्रका द वाला सिरा बड़े चित्रके पीछेसे, उसकी अ रेखाके चीरे से आगे निकालो। उसी सिरेको फिर ब वाले चीरेसे पीछे ले जाओ। फिर उसे स वाले चीरेसे आगे लाओ और द वाले चीरेमेंसे पीछे ले जाओ। लो, हाथीराम तैयार हो गए। देखो नमूना आकृति।

जब तुम छोटेवाले चित्रका द सिरा, जो बड़े चित्रके पीछे छिपा है, पकड़कर दाईं ओर खींचोगे, तो हाथी चूहेसे डरकर उछल पड़ेगा। छोटे चित्र का अ वाला मुड़ा हुआ सिरा वापस बाईं ओर खींचनेसे हाथी फिर सीधा हो जाएगा।

इस तरह बारबार करके देखो और हाथीराम को चूहेजीसे डरते देखने का मजा लो। अपने

नमूना आकृति

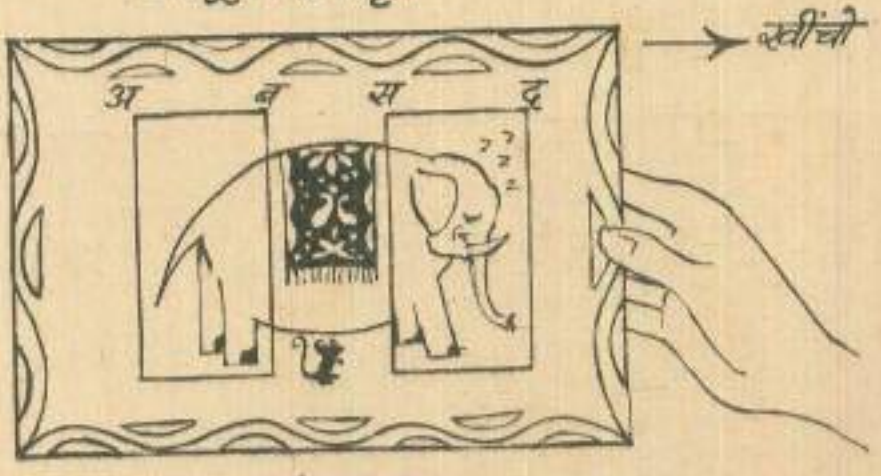

छोटे चित्र का 'द' वाला सिरा
बड़े चित्र के द वाले चीरे पर

kissekahani.com

कहानी

धरती और पर्वत

—राधेश्याम कपूरचंद लहर

बात बहुत पुरानी है। हमारी इस धरतीके अनगिनत बेटे थे। उन बेटोंमें पर्वत उसका एक लाड़ला बेटा था। उस समय वह आजके पर्वतोंकी तरह ऊंचा नहीं था। बल्कि धरती माताके दूसरे बेटोंकी तरह उसका भी कद था।

एक दिन धरतीको बहुत सारा काम करना पड़ा, जिससे थककर वह चूर-चूर हो गई। उसके अन्य सारे बेटे खा-पीकर काम करने या खेलने चले गए थे। केवल पर्वत उसके पास बैठा समुद्रकी ऊंची ऊंची लहरोंसे खेल रहा था। धरतीने सोचा कि वह थक गई है, थोड़ी देरके लिए एक झपकी ले ले, तो उसकी थकान मिट जाएगी। उसके बाद वह खाना खाएगी। यह सोचकर उसने पर्वतसे कहा, "बेटा, तू कहीं जाना मत। मैं जरा देरके लिए सो लूं, तब तक तू मेरे खानेका ध्यान रखना।"

"अच्छा, मां," पर्वतने कहा, "मैं ध्यान रखूंगा, तुम फिकर न करो।" और वह उसी तरह उन लहरोंसे खेलता रहा।

धरती सो गई। कुछ देर बाद जब उसकी नींद टूटी, तो उसे खूब जोरोंकी भूख लग रही थी। उसे खाना खानेकी सुधि आई। लेकिन यह क्या? खाना तो चारों ओर बिखरा पड़ा था। किसीने उसे जूठा कर दिया था और खानेके बाद बाकी खानेको चारों ओर बिखेरकर चला गया था।

उसने पर्वतको पुकारा। लेकिन पर्वत वहां कहां था! वह तो लहरोंके साथ खेलता खेलता काफी दूर चला गया था।

बेचारी धरती अब क्या करे? उसके पेटमें चूहे कूद रहे थे। लेकिन अब वह खाए क्या? पर्वतपर उसे बड़ा क्रोध आया। उसे वह सबसे अधिक दुलार करती है, दूध-दही खिलाती है, लोरियां गा-गाकर सुलाती है, पर वह है कि अपनी मनमानी करनेसे बाज नहीं आता। यदि उसने उसकी बातोंका खयाल रखा होता, तो क्यों आज उसे इस तरह भूखा रह जाना पड़ता।

और गुस्सेसे भरी, भूखी-प्यासी वह उसी तरह बैठी रह गई।

कुछ देर बाद पर्वत झूमता हुआ आता दिखाई पड़ा। जब वह पास आ गया, तो धरती उसपर बरस पड़ी। गुस्सेमें पर्वतको उसने काफी बुरा-भला कहा और उसे एक कमरेमें बंद कर दिया। सदा प्यार और दुलार पाने वाले बेटेके लिए उसकी मांका यह व्यवहार एकदम नई बात थी। वह बिलकुल भौंचक्का रह गया।

धरतीके प्यारने उसे हठी और गर्वीला बना दिया था। इसलिए अपनी मांके इस व्यवहारने उसे एक क्षणके लिए भी अब वहां ठहरना मुश्किल कर दिया। खिड़कीकी राह कूदकर वह कमरेसे बाहर आया और अपनी मांका घर छोड़कर आकाशकी ओर भागने लगा।

धरतीने अपने बेटेको इस तरह भागते देखा, तो वह विक्षिप्त-सी हो गई। पर्वतको आवाज देती हुई वह उसे पकड़ने दौड़ी। किंतु पर्वतका लगभग सारा शरीर तब तक आकाशमें पहुंच चुका था—केवल उसके पैर ही बाकी थे।

धरतीने लपककर उसके पैरोंको पकड़ लिया। पर हठी और गर्वीले बेटेने अपनी मांके अनुरोधको न माना। वह धरतीके पास वापस लौटनेको राजी न हुआ।

तभीसे मां और बेटेकी जिद चल रही है। बेटा आकाशकी ओर बढ़नेके लिए अपनी पूरी ताकत लगा रहा है और मां उसे अपने ही पास रखनेके लिए उसके पैर खींच रही है।

इस धरतीपर बसे लोगोंको जो भूकम्पका अनुभव होता है, वह इन्हीं मां और बेटेकी उस खींचातानीका परिणाम है। ●

(कैलिफोर्नियाकी एक लोक कथापर आधारित)

कहानी

चतुर

बंदर और सियारकी गहरी दोस्ती थी। जंगलमें रहते थे और मौज करते थे। बंदरको देखे बिना सियारको चैन नहीं, सियारसे गपशप लड़ाए बिना बंदरका खाना हजम न हो।

पतझड़का मौसम आया। पेड़पर फल रह गए न पत्ते। बंदरको खानेके लाले पड़ गए। सियारका पेट तो इधर-उधर मुंह मारकर भर जाता, लेकिन बंदरको उस जंगलमें ऐसी कोई चीज न मिलती जिसे खाकर भूख मिटा सके।

बंदरने सियारसे कहा, "भाई, मुझे तो कहीं जाना पड़ेगा। अब हाथपर हाथ रखकर बैठनेसे नहीं चलेगा।"

सियारने बात समझी। मन मारकर बुझे दिलसे बोला, "ठीक है, दोस्त, हो आओ। जरा आना जल्दी। फिक्रमें रहूंगा। मन भी नहीं लगेगा।"

बंदरने कहा, "अरे, यह भी कोई कहनेकी बात है। आंधीकी तरह जाऊंगा, तूफानकी तरह आऊंगा।"

यह पेड़ फांद, वह पेड़ फांद बंदर चल पड़ा। गांवमें आया। पेड़ यहां भी बिना पत्तोंके थे। इसलिए वह घरोंमें ताक-झांक करने लगा। कुछ उघड़ा-खुला न देखा, कोई खुशबू भी नहीं पाई कि घुसपैठ करके मालपर हाथ साफ कर सके। हां, एक बनियेकी दूकानपर जाकर उसकी नजर टिक गई।

दूकानमें बहुत-सी चीजें हैं जिनसे पेट आसानीसे भरा जा सकता है, यह सोचकर मौका देख वह बनियेकी दूकानमें ऊपरके छज्जेकी तरफसे घुस पड़ा। बनियेको दूकान बंद करनेकी जल्दी थी शायद, वह दूकान बंद करके चला गया।

बंद दूकानके अंदर बंदरको पूरी आजादी थी। पहले सत्तूकी फंकियां मारीं।

kissekahani.com

बंदर

उसके बाद गुड़के ढेलोंका सफाया किया। कई दिनोंका भूखा था, अब जो भर पेट खाया, तो नींदके झोंके आने लगे। सोचा, क्या हर्ज है एक झपकी ही ले ली जाए। वह सो गया। अचानक खटपटकी आवाज सुनकर उसकी नींद खुल गई।

वह समझ गया, दूकान खुलने वाली है। इसलिए आड़में छिप गया। इतने में बनियेकी लड़की वहां आई और एक ग्राहकको कुछ सौदा देकर दूकान बंद करके फिर चली गई। बंदरने अबकी बार दूकानका दरवाजा बंद होते ही अंदरसे भी कुंडी लगा ली। एक बार फिर छककर पेट-पूजा की। दो अंगड़ाइयां लीं। जानेके इरादेसे निकलनेका रास्ता खोजा। अरे यह क्या, वहां तो निकलनेका कोई रास्ता ही नहीं। मन मारकर बैठ गया और दूकान खुलनेका इंतजार करने लगा।

बनियेकी लड़की इस बार फिर आई। उसे गुड़ लेना था। उसने दरवाजा खोलनेकी कोशिश की। अंदरसे कुंडी लगी थी, खुलता कैसे। वह दरवाजा भड़भड़ाने लगी। बंदर अभी तक तो शानसे बैठा हुआ दरवाजा खुलनेका इंतजार कर रहा था। अब सोचा, यूं धड़ल्लेसे निकलनेका मतलब है कचूमर निकलवाना। बनिया छोड़ेगा नहीं। अच्छा यही है कि छिपकर बैठा रहूं। बनियेकी नजर चूकेगी और चम्पत हो जाऊंगा। वह लपककर कोनेमें दुबक गया। हड़बड़ाहटमें बोतलें गिरा डालीं।

बनियेकी लड़कीने दरवाजा खुलते न देख और अंदरसे आती आवाज सुनकर पूछा, "कौन है अंदर?"

बंदरने सोचा, क्यों न रोब गांठ ले। बिना इसके निकलनेका रास्ता नहीं मिलेगा। वह गरजकर बोला :

मैं हूं काल, महाकाल,
मेरे हैं दो सींग विशाल,
एक सींग से अत्थर फोड़ूं,
एक सींग से पत्थर फोड़ूं,
आ, बनियेकी बेटी, तेरा पेट फोड़ूं!

दीप

kissekahani.com

यह बात सुन बनियेकी लड़की घबड़ा गई। समझी—कोई भूत घुस आया है दूकानमें। दौड़ती-हांफती बनियेके पास गई। जाकर पूरी बात सुनाई। बनियेने अपनी बेटीकी बातका यकीन नहीं किया। वह खुद पहुंचा। उसने कड़ककर पूछा, "कौन है अंदर?"

बंदरको पहले ही मजा आ चुका था। वह फिर वही बात बोला। बस आखिरमें बनियेकी बेटीकी जगह बनियेका पेट फोड़नेकी बात कही।

बनियेके भी होशो-हवास गायब हो गए। यह तो सचमुचमें कोई भूत है। वह भागा भागा थाने पहुंचा। थानेदारको सारा किस्सा सुनाया। उसने बनियेको महामूर्ख समझा। लेकिन कर्त्तव्य पूरा करनेको खुद आया। आकर उसने भी वही सवाल पूछा, "कौन है अंदर?" इस बार भी बंदरने वही बात दोहराकर अंतमें थानेदारका पेट फोड़नेकी बात कही। लेकिन थानेदार ऐसे मानने वाला नहीं था। उसने बनियेसे कहा, "तुम बेफिक्र होकर दूकान खोलो, देखता हूं, कैसा महाकाल है!"

बनियेने बहुत हिम्मत करते हुए दरवाजा खोलनेकी कोशिश की। वह तो अंदरसे बंद था, खुलता कैसे।

सवाल यह उठा कि अंदर घुसा कैसे जाए। थानेदारने कहा, "बढ़ई या लुहार जो मिले तुरंत बुलाओ, हम दरवाजा खोलकर मानेंगे।"

इतनी देरमें दूकानके आगे काफी बड़ी भीड़ लग गई थी। सभी तमाशा देख रहे थे।

अंदर बंदरने जान लिया जरूर यह थानेदार दरवाजा खुलवाकर मानेगा। जब जाना ही है तो पूरे इंतजामसे क्यों न जाए। यह तय करके उसने शीरेके ड्रममें डुबकी लगा दी। शीरा अच्छी तरह शरीरमें लिपट गया। ड्रमसे निकलकर उसने चनेके ढेरमें आधी लोट लगाई, बादमें कुरमुरेके ढेरमें भी लोट लगा ली। उसके शरीरपर चने और कुरमुरे अच्छी तरह चिपक गए थे।

इतना कुछ करनेके बाद उसने चुपकेसे कुंडी खोली और दरवाजेकी ऊपरी चौखटपर मौकेके इंतजारमें बैठ गया।

कुंडी खुल जानेसे हवाका दबाव पाकर दरवाजा खुद ही खुल गया। बाहरकी भीड़ यह समझकर कि महाकाल सचमुच निकलने वाला है भाग खड़ी हुई। बनिया बढ़ई बुलाकर ला रहा था, उसने भागती भीड़को देखा और सुना कि महाकाल बाहर आ रहा है, तो डरके मारे खुद भी भाग खड़ा हुआ।

बहुत दूरपर आकर भीड़ दूरसे ही तमाशा देखनेको खड़ी हो गई। थानेदारके साथ सिर्फ एक सिपाही खड़ा था। दोनों ही अंदर घुसे। उन दोनोंकी निगाहें सामने और अगल-बगल दौड़ रही थीं, ऊपरकी तरफ नहीं। खिसियाए बंदरने थानेदारपर पीछेसे हमला किया और उसकी टोपी उतारकर बाहर भागा। बिजलीकी-सी तेज रफ्तारसे उसे भागते लोगोंने देखा। यह सब पलक झपकतेमें हो गया और हकबकाए लोग चने और कुरमुरेमें लिपटे बंदरको देखकर भी जल्दीमें यह नहीं समझ सके कि वह कौन था। उन्होंने उस अजीबसे जंतुको महाकाल समझ लिया।

मुसीबत टल गई जानकर सब लोग फिर दूकानपर आ जमे। थानेदार अचानक हुए हमलेसे भौचक्का हो गया था। उसके गाल और गलेपर पंजेके निशान थे और खून भी निकल रहा था। सिपाही भी डरके मारे थरथर कांप रहा था।

सभी लोगोंके मनमें यह बात अच्छी तरह जम गई कि दूकानमें सचमुच महाकाल घुसा था।

बंदर भागता-दौड़ता जंगलमें वापस पहुंच गया। वहां उसके सोचमें बैठा सियार इंतजार कर रहा था। पहले तो बंदरको देख सियार पहचान ही नहीं सका। बादमें बंदरके कहनेपर समझा। बंदरने हंस हंस कर सारा किस्सा सुनाया।

सियार हंसते हंसते लोट-पोट हो गया।

बंदर अपने शरीरसे चने-कुरमुरे छुड़ाता गया और सियारको खिलाता गया। उसने खुद भी खाया। सियार शीरेकी मिठासमें डूबे चने और कुरमुरे खाकर मस्त हो गया।

दूसरे दिन सियार बोला, "बंदर भैया, अपुनको तो कलवाली चीजका ऐसा चस्का लगा है कि कोई और चीज खानेको मन ही नहीं करता। पता बताओ, मैं भी जाऊंगा।"

बंदरने समझाया, "अभी कुछ दिन ठहर जाओ। लोग सावधान हो गए होंगे। फिर तुम तो भूलेसे मत जाना। मैं ही ला दूंगा।"

सियार जीभ चटखारते हुए बोला, "तुम लाओगे थोड़ा-सा ही, मैं ज्यादा खाना चाहता हूं। आज न सही फिर कभी सही, लेकिन जाऊंगा मैं भी। तुम पता बता दो।"

बंदरने पता बता दिया। साथ ही ताकीद कर दी कि जल्दबाजी न करना, वर्ना बुरा होगा।

सियारको चैन कहां! बहाना तो यहां-वहां घूमकर आनेका किया और चल पड़ा गांवकी तरफ। दूकान भी दिख गई। बनिया दूकानसे थोड़ा हटकर दो-तीन लोगोंसे खड़ा बात कर रहा था। चर्चा वही महाकालकी थी। सियारने फुरती बरती और दूकानमें घुस गया। बोरियोंके पीछे छिपकर दूकान बंद होनेका इंतजार करने लगा।

बनिया रोज दोपहरके समय दूकान बंद करके खाना खाने घर चला जाता था। फिर शामको आकर खोलता था। उस दिन भी उसने यही किया। उसने दूकान बंद की और घर चला गया। काफी देरसे इंतजारमें बैठे सियारने गपागप पेट भरना शुरू किया। उस दिन उसका पेट ही नहीं भर रहा था। जितना खाता, उतनी ही लालसा बढ़ती। वह खाता रहा और उछल-कूद मचाता रहा।

वापस आकर बनिया दूकान खोल ही रहा था कि उसे अंदरसे खटर-पटर सुनाई पड़ी। उसके हाथ रुक गए। मुंहसे निकल गया, "कौन?"

सियारने बंदरवाली बात दोहरा दी। लेकिन जैसा कि बंदरने पहले लड़कीके लिए कहा था, वैसा ही सियारने भी बिना समझे-बूझे उसी क्रममें कहा, "आ बनियेकी लड़की तेरा पेट फोड़ूं।"

बनिया पहले तो डरा, पर जब उसने अपने बजाय अपनी बेटीका पेट फोड़नेकी बात सुनी, तो उसका माथा ठनका। यह कैसा महाकाल है, जो अंदरसे असलियत नहीं जान पाया। उसने कुछ तो शकमें और कुछ साहसकी कमीसे दूकान नहीं खोली। थोड़ी देर चुप बैठा रहा।

उसने बहुतसी तरकीबें सोचीं, लेकिन कोई पसंद नहीं आई। लोगोंसे बात की। लोग थानेदारके हाल देख ही चुके थे। इसलिए कोई भी आनेको तैयार नहीं हुआ। अकेले उसकी भी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उसने आखिर यही तय किया कि दूकानके दरवाजे खुले छोड़ दे और खुद हट आए। यही उसने किया भी। आड़में होकर आहिस्ते-आहिस्ते आधा दरवाजा खोल दिया। खुद हटकर दूर आ खड़ा हुआ।

थोड़ी देर तक किसीको बाहर न आते देख उसने समझा, महाकाल निकलता दिखाई दे, यह जरूरी नहीं है। अदृश्य रूपसे गायब हो गया होगा। वह दूकानके निकट अब बेफिक्रीसे आया।

हुआ यह कि खूब पेट भर जानेके बाद सियारको सुस्ती सवार थी। बनियेको दूकान खोलते और लौट जाते भी सुना था उसने, इसलिए सुस्तीमें चूर वह सो गया था। बनियेने चुपकेसे झांककर देखा, उसकी गद्दीपर मस्तीसे सियार सो रहा है, तो वह उल्टे पांव लौटा।

थोड़ी देरमें कई लोग लाठियां लेकर इकट्ठे हो गए। बनियेने दूकानमें घुसकर सोए

(शेष पृष्ठ ७४ पर)

बोध-कथा

एक जंज़ीर जो टूट गई

—हुस्नजमाल छीपा

एक दिन बस्तीके बाहर कूड़े-करकटके ढेरपर एक मुर्गा चुन चुनकर कीड़े-मकोड़े खा रहा था। वह अपने ध्यानमें मस्त भोजन ढूंढ रहा था कि एक नन्हा-सा मकोड़ा उसके पंजेके नीचे आ गया। मुर्गेने उधर ध्यान किया, क्योंकि उसके पैरमें गुदगुदी-सी होने लगी थी। उसने अपनी चोंच उधर बढ़ाई, तभी मकोड़ा प्रार्थनाभरे शब्दोंमें गिड़गिड़ाया—"मुझपर दया करो, कलगीवाले बादशाह! मैंने आपका क्या बिगाड़ा है? मुझे जरा और जीने दो। अभी तो दुनियामें आया हूं!"

नन्हे मकोड़ेकी याचनाका मुर्गेपर प्रभाव पड़ा और उसने मकोड़ेको छोड़ दिया तथा पुनः कूड़ेके ढेरपर अपना भोजन चुनने लगा। थोड़ी देरमें एक बिल्लीने मुर्गेपर झपट्टा मारा। वह बड़ी देरसे भोजनकी तलाशमें थी। घुटी घुटी सांससे मुर्गा घबराकर बोला—"ओ शेरकी मौसी! मुझे छोड़ दे! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? मुझे थोड़ा और जीने दे। मैंने भी एक मकोड़ेको दया करके छोड़ा है!"

बिल्लीने मुर्गेकी याचना स्वीकार कर ली। उसे छोड़ दिया और आगे बढ़ गई। वह सड़क पार कर रही थी कि एक कुत्तेकी दृष्टि उसपर पड़ गई और वह तुरंत उसे दौड़कर दबोच बैठा। बिल्लीकी चीख निकल गई। उसने गिड़गिड़ाकर कर प्रार्थना की—"मेरे पुराने मित्र! मुझपर दया कर! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? मैंने भी आज मुर्गेपर रहम किया है जिसने एक मकोड़ेपर दया की थी!"

कुत्तेने बिल्लीको छोड़ दिया और अपना रास्ता लिया।

उस कुत्तेकी मुठभेड़ एक बार भेड़ियेसे हो गई। भेड़िया कुत्तेको ही खोज रहा था। कुत्तेको देखते ही वह उसपर झपटा। कुत्ता घबरा गया—"मेरे ताकतवर मित्र! दयाकर मुझपर। मैंने भी एक बिल्लीको छोड़ दिया है, जिसने एक मुर्गेपर दया की थी, मुर्गेने एक मकोड़ेकी जान बख्शी थी!"

खूंखार भेड़िया कुत्तेको छोड़कर जंगलमें गुम हो गया। एक भूखा शेर भोजनकी तलाशमें घूम रहा था। भेड़ियेको देखकर उसके मुंहमें पानी आ गया। भेड़िया शेरको सामने देखकर सहम गया। गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने लगा—"ए जंगलके राजा! मेरी जान बख्श दे! मैंने भी एक कुत्तेको छोड़ा है, जिसने एक बिल्लीपर, बिल्लीने एक मुर्गेपर, मुर्गेने एक मकोड़ेपर दया की थी!"

शेरने अपनी भूखपर काबू रखा और भेड़ियेको छोड़ दिया।

ठीक उसी समय एक शिकारी दुनाली बंदूक लिये शेरके मस्तककी ओर निशाना बांध रहा था। शेरकी दृष्टि उसपर पड़ी, तो मौत सामने दिखाई दी। वह शक्तिशाली अवश्य था, लेकिन दो पैरके प्राणी और उसकी दुनाली बंदूकसे बड़ा डरता था। उसने भी शिकारीसे याचना की—"ए सर्वश्रेष्ठ प्राणी! मुझे जाने दो। अपनी दुनाली बंदूकका मुंह फेर लो। मैं नरभक्षी नहीं हूं। मैंने किसीको हानि नहीं पहुंचाई है। मैंने अभी अभी एक भेड़ियेकी जान बख्शी है, जिसने कुत्तेकी, कुत्तेने बिल्लीकी, बिल्लीने मुर्गेकी, मुर्गेने मकोड़ेकी जान बख्शी है। सबने एक दूसरेपर दया की है।" और वह याचक बनकर खड़ा हो गया।

शिकारी, जो मनुष्योंके बीच रहता था, किसी बातपर विश्वास नहीं करता था उसने हमेशा लोगोंको विश्वासघात करते ही देखा था। अतएव उसने शेरकी प्रार्थनाको एक षड्यंत्र समझा और खटका दबा दिया। शेर दुनालीमेंसे आग निकलनेसे पूर्व उछलकर वार बचाकर भाग निकला। भूखा तो था ही, शिकारीके अत्याचारने उसे और उत्तेजित कर दिया। वह भेड़ियेके पीछे दौड़ा।

भेड़िया अभी जंगलमें ही था और उसने सारा हाल देख लिया था, इसलिए वह सचेत था। वह वहांसे नौ-दो-ग्यारह हो गया। अब वह मन ही मन पछता रहा था कि उसने कुत्तेको व्यर्थमें क्यों छोड़ दिया।

कुत्तेने जब भेड़ियेकी आंखोंमें भूख देखी, तो उसे संशय हुआ और बिना देर किए वह भेड़ियेके चंगुलसे निकल भागा। उसे भी बड़ा पश्चात्ताप हो रहा था।

इसी प्रकार कुत्ता बिल्लीकी और बिल्ली मुर्गेकी तलाशमें फिरने लगे।

अंतमें जब मुर्गेने कूड़ेके ढेरमेंसे मकोड़ेको उठाकर पुनः मुंहमें रखा, तो मकोड़ा हक्का-बक्का रह गया। वह गुत्थी सुलझाने लगा कि यह सब अचानक कैसे हो गया? जीवन-दान करने वाला मुर्गा उसके जीवनके पीछे क्यों पड़ गया? लेकिन गुत्थी सुलझ न सकी। मुर्गेने उसे चोंचमें दबाकर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए!

और, बच्चो, यों एक जंजीर जो बनी थी, वह टूट गई—दयाकी जंजीर!

मु. म. कोर्ट, बिलाड़ा, जिला जोधपुर।

हास्य कहानी

दादाजी जासूस बने

• अवतारसिंह

kissekahani.com

"देखो, बच्चो, तुम्हें अकेले छोड़कर जानेकी हमारी कतई इच्छा नहीं थी, पर इसे तुम हमारी मजबूरी समझो," दादाजी कुछ दुखी-से होते हुए बोले।

"दादाजी, आपको इतना ही दुःख होता हो, तो हम भी साथ चले चलते हैं," मुन्नूने सुझाया।

"तुम समझते क्यों नहीं, मुन्नू भाई? वहां काम बड़ोंका ही है," दादाजीने कहा।

"पर, दादाजी, नाटक देखना बच्चोंके स्वास्थ्यपर तो किसी तरहका हानिकारक प्रभाव नहीं डालता!" पिंकीने शंका समाधानकी कोशिश की।

"यह भी ठीक है दरअसल दोष रामलाल-का ही है। उसे दो पास लाने न चाहिएं थे। या फिर तीन टिकटें ले आता। इस पाससे केवल तीन जने ही जा सकते हैं।"

"दादाजी, तो मुझे, राजू, पिंकीको जाने दीजिए न। यह क्या अच्छा लगता है कि बड़े तो नाटक देखें और बच्चे घर बैठें!" मुन्नूने दूसरा सुझाव दिया।

"नहीं, भई, अब इस विषयपर और बहस कतई संभव नहीं है; समय कम है," दादाजीने लोकसभाके अध्यक्षवाले अंदाजमें कहा। कुछ देर बाद वह बोले, "मैं कहना यह चाहता था कि हमारे पीछे तुम लोग ऊंट-पटांग चीजें मत खाना। ऊंट-पटांगसे मेरा मतलब है बाजारकी

तली चीजें । तुम लोग घरसे बाहर कदम ही न रखना । न होगा बांस न बजेगी बांसुरी । न तुम बाजारकी तली चीजें देखोगे, न तुम्हारा जी ललचेगा । पर घर बैठनेका मतलब यह नहीं कि घरका सामान उलट-पलट कर दो । खास तौरसे रसोईमें धरा-पटकी मत करना । बच्चोंको आजादी देना शेरको खुला छोड़ना है, पर इस समय क्या किया जाए, मजबूरी है । तुम लोग पढ़ते रहना । पढ़नेमें जी लगाओगे, तो इधर-उधरकी बातें नहीं सूझेंगी ।" दादाजीने ढेर सारे निर्देश एक सांसमें बोल दिए ।

मम्मी, डैडी और दादाजी सप्रू हाउस 'पतंग कट गई,' नाटक देखने जा रहे थे । दादाजीको फिल्मोंसे जितनी चिढ़ थी, नाटकसे उतना ही प्यार । नाटकको वे अपने जमानेकी चीज समझते थे । नाटक देखनेकी उमंगमें दादाजी बहुत पहले ही तैयार हो गए थे । और अब बच्चोंसे उलझकर अपना समय काट रहे थे । तभी मम्मी और डडी तैयार होकर कमरेसे निकल आए ।

"बच्चो, पीछस घरका खयाल रखना," मम्मीने कहा ।

"आप चिंता न करें, मम्मी," बच्चोंने एक स्वरमें कहा ।

फिर दादा, मम्मी और डैडी बाहर निकल गए ।

राजू, मुन्नू और पिंकी किताबें खोलकर बैठे । तीन-साढ़े तीन मिनिट वे बड़ी गंभीरतासे पढ़े । फिर उनका जी उचाट होने लगा । तीन-चार मिनिट पढ़कर उन्हें यों लगा जैसे वे लगातार पिछले चार-पांच दिनोंसे पढ़ रहे हों । राजूने बाकी दोको याद दिलाया : "आज हम घरमें अकेले हैं!"

मुन्नू और पिंकीने किताबें बंद कीं । फिर वे भी मान गए कि वे अकेले हैं और बिल्कुल अकेले!

"नाटक तीन घंटेमें खत्म होता है न?" मुन्नूने पूछा ।

"जरूरी नहीं है । 'पतंग कट गई' डेढ़ घंटेका है—मधु कह रही थी । वह देखकर आई है । फिर भी तीन बजेसे पहले वे लोग वापस नहीं आ सकते । तब तक हम एकदम स्वतंत्र हैं—बिल्कुल फ्री ।" राजूने कहा ।

फिर कुछ देर वे तीनों चुप रहे । कुछ देर बाद राजूने ही कहा, "आज चाय बनाई जाए ।"

"हां, पढ़नेसे पहले चाय जरूर पीनी चाहिए, इससे दिमाग चुस्त रहता है," पिंकी भी मान गई ।

"पढ़ाई ही क्यों, कुछ भी काम करनेसे पहले चाय पीनी जरूरी है, नेहरूजी स्पीच देनेसे पहले चाय पीकर आते थे," मुन्नू बोला ।

"बिल्कुल ठीक! अरे, कुछ लोग तो चाय-पानीकी पार्टीमें जानेसे पहले भी चाय पीते हैं । चाय जैसी बढ़िया कोई चीज नहीं!" कहते हुए राजू उठ खड़ा हुआ ।

फिर तीनों रसोईमें आ गए । स्टोव जलाना उन्हें आता नहीं था । प्लग लगाकर राजूने हीटर

गर्म किया। पिंकीने पूरे तीन कप पानी डालकर पतीली चढ़ा दी।

राजूने ताकपरसे चाय, चीनीके डिब्बे उतारे, मुन्नूने जालीमें से दूधका लोटा निकाला।

पानी उबलने लगा। तीनों इसपर तो सहमत हो गए कि दूध सबसे बादमें डालना है, पर चाय-की पत्ती और चीनीका मामला लेकर बहस छिड़ गई कि किसे पहले डाला जाए और कितना?

"पहले चाय डालनी चाहिए। तुमने देखा नहीं, बड़ी दावतोंमें केवल चायका पानी केतलीमें होता है, दूध-चीनी लोग अपने आप मिलाते हैं," पिंकीने कहा और इसीपर फैसला हो गया।

राजूने नापकर बराबर बराबर मात्रामें पहले चाय और फिर चीनी डाली। जब दूध डाला गया, तो सचमुच ही चाय जैसे रंगवाली कोई चीज तैयार हो गई। तीनोंकी खुशीका कोई ठिकाना नहीं रहा।

तीन कप-प्लेट निकाले गए और चाय उनमें डाली गई। तीनों कप लबालब भर गए और फिर भी कुछ चाय पतीलीमें बची रह गई।

"अरे, यह पतीलीमें चाय कैसे बच गई?

"बिंदु, गणित के मास्टर जी को अभिनंदन-पत्र के साथ मसके का पाकिट क्यों भेजना चाहते हो?"

पिंकी, तूने पानी चार कप चढ़ा दिया होगा।" राजूने गुस्सेमें पिंकीकी ओर देखा।

"नहीं, भैया, मुझे पक्का याद है, मैंने तीन कप पानी डाला था," पिंकीको भी हैरानी हो रही थी कि पतीलीमें चाय बच कैसे गई।

"अरे, हमने बादमें दूध भी तो डाला है। इसका मतलब है कि जितनी चाय बनानी हो, पानी उससे थोड़ा कम डालना चाहिए," अक्ल-की बातकी मुन्नूने।

तीनों चाय पीने लगे। चाय कुनैनकी तरह कड़वी थी। पर तीनों चुपचाप उसे प्रसन्न-मुख पीते रहे। माथेपर शिकन तक न आने दी।

"मुन्नू भाई, यह पतीलीमें बची चाय तुम ही पी लो। मेरा पेट भर-सा गया है," राजूने किसी तरह अपना कप खत्म करते हुए कहा।

"नहीं, मैंने तो आज खाना कुछ अधिक खा लिया था। यह पिंकी पिएगी," मुन्नू बोला।

पिंकीको पहला कप पीना ही कठिन पड़ रहा था। वह घबराकर बोली, "नहीं नहीं, तुम्हारे होते मैं चाय कैसे पी सकती हूं?"

"दरअसल चाय कड़वी थी। मुंह खराब हो गया।" राजूने आखिर मनकी बात कही।

"ठीक कहते हो, भैया, पर पहली बारमें ऐसे ही होता है," पिंकीने अपनी बची आधा प्याला चाय भी पतीलीमें डाल दी।

"हमें मुंहका स्वाद ठीक करनेके लिए कुछ खाना चाहिए। राजू, तुमने वह रुपया कहां रखा है, जो मम्मीने सुबह तीनोंके लिए दिया था?" मुन्नूने पूछा।

"मेरी जेबमें है।"

"कुछ फल ले आओ," पिंकीने सुझाया।

"तू पागल हो गई है। फल तो डैडी रोज शामको ले आते हैं। हमें कोई ऐसी चीज खानी चाहिए, जो हमने पहले कभी न खाई हो या बहुत कम खाई हो," राजू बोला।

"बिल्कुल ठीक, चाट-पकौड़ी हो जाएं!" मुन्नूने उछलकर कहा।

"हां, चाट-पकौड़ी दादाजीने बहुत दिनोंसे खाने नहीं दी है," राजू भी सहमत हो गया।

अब इसपर झगड़ा होने लगा कि कौन घरकी रखवाली करे, कौन चाट-पकौड़ी लेने जाए। राजू-मुन्नू कहते थे—लड़कियां भगवानने बनाई ही इसलिए हैं कि घरकी रखवाली करें,

इसलिए चाट-पकौड़ी लेने हम जाएंगे । पिंकी जानती थी कि यदि वे दोनों चले गए, तो आधा हिस्सा रास्तेमें ही हड़प कर जाएंगे। बाकी आधे-का तिहाई उसे मिलेगा । पिंकीने उत्तर दिया : "वे जमाने लद गए, जब लड़कियां बुरका पहनकर घरमें बैठती थीं । अब तो वे सब जगह लड़कों-की बराबरी करती हैं । मैं ही बाजारसे चाट-पकौड़ी लेने जाऊंगी ।"

राजू-मुन्नू इतना बड़ा खतरा मोल लेनेको तैयार नहीं थे ।

कोई फैसला न हो सका । आखिर घरमें कुंडी लगाकर वे तीनों ही बाजार गए और तीन पत्ते बनवाकर लौट आए। पत्ते साफ करनेमें किसी-ने भी आधे मिनिटसे अधिक समय नहीं लगाया।

"अब हमें मिलकर अपने कारनामोंके सारे चिह्न मिटा देने हैं। चोर-डाकू भी माल उठाकर भागनेसे पहले सारे चिह्न मिटा देते हैं," मुन्नू-ने कहा ।

"बात तो ठीक है, पर तुम्हें ठीक उदाहरण तक देना नहीं आता । तुम सारे कामोंको चोरी और डाका बता रहे हो। वे दूसरोंका सामान खाते हैं, हमने अपना, अपने घरका, सामान खाया है । हम चाहें तो, इस घरमें आग भी लगा सकते हैं!" पिंकी मुन्नूको लगभग डांटती हुई बोली ।

"झगड़ा छोड़ो, काम करो!" राजूने उन्हें आदेश दिया, "मुन्नू, तुम इन पत्तोंको कारपोरेशन-के कूड़ाघरमें फेंक आओ । यहां घरके ढोलमें फेंकोगे, तो दादाजी पकड़ सकते हैं । पिंकी, तुम बर्तन साफ कर दो, मैं उन्हें ताकपर सजा दूंगा ।"

तीनोंने अपने अपने काम झटपट निबटाए। फिर वे कालीनपर लेटकर आराम करने लगे ।

साढ़े तीन बजे दादाजी धड़धड़ाते हुए घरमें घुसे । यह बच्चोंका परम सौभाग्य था कि उस समय वे पढ़नेके कमरेमें बैठे थे । दादाजीके जूतोंकी चर्रम-चूं सुनकर उन्होंने झटपट जो भी किताब हाथमें आई, उठा ली । पर दादाजी इस कमरेमें आए ही नहीं। वह सीधे रसोईमें घुसे। वहां कुछ देर खटर-पटर करते रहे । बच्चोंने सोचा, चाय बना रहे होंगे, पर एक मिनिट बाद ही दादाजी उधर चले आए ।

"दादाजी, मम्मी और डैडीको आप कहां छोड़ आए?" पिंकी ने बड़े प्रेमसे पूछा ।

"अरे, औरत-जात मर्दका मुकाबला कब कर सकती है? तुम्हारी मम्मी बसमें से उतरते उतरते आधा घंटा लगा देती हैं । बेचारे राम-लालको भुगतना पड़ता है । मैं बसमें से झटपट उतरा और चला आया!" दादाने मुस्कराते हुए कहा । पर अचानक ही उनके चेहरेसे मुस्कराहट उड़ गई और वहां क्रोधकी घनघोर घटा घिर आई। क्षण भर बाद ही वह बिजलीकी तरह कड़के: "तुम लोगोंने चाय क्यों बनाई थी?"

बच्चे सन्न रह गए । तीनोंको जैसे सांप सूंघ गया हो । वे एक-दूसरेका मुंह देखने लगे । पिंकीने साहस कर धीरेसे राजूसे कहा, "क्यों भैया, हमने चाय बनाई थी? मुझे तो याद नहीं!"

"मेरा ख्याल भी यही है!" राजू उससे भी धीरे बोला ।

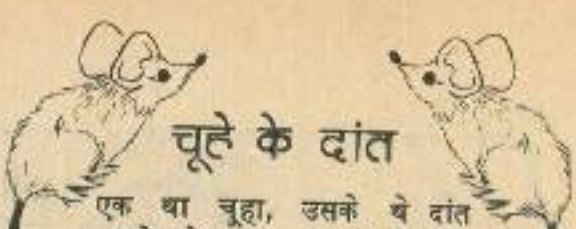

चूहे के दांत

एक था चूहा, उसके थे दांत
उसके थे दांत, उसके थे दांत
उसके थे दांत, भाई, उसके थे दांत

एक दिन चूहे को रोटी मिली
रोटी को चूहे ने दांत से काटा
कुतुर - कुतुर, कुतुर - कुतुर
एक था चूहा उसके थे दांत
उसके थे दांत, अरे भई, उसके थे दांत

एक दिन चूहे को लड्डू मिला
लड्डू को चूहे ने दांत से काटा
गुपुर - गुपुर, गुपुर - गुपुर
एक था चूहा उसके थे दांत
उसके थे दांत, हां हां, उसके थे दांत

एक दिन चूहे को लकड़ी मिली
लकड़ी को चूहे ने दांत से काटा
कुरुर - कुरुर, कुरुर - कुरुर
एक था चूहा उसके थे दांत
उसके थे दांत, ओ हो, उसके थे दांत

एक दिन चूहे को लोहा मिला
लोहे को चूहे ने दांत से काटा
. . . . . .
एक था चूहा उसके नहीं थे दांत!

—रघुवीर सहाय

"झूठ बोलते हो!" दादाजीने उन्हें डपटा।

फिर जरा रुककर बोले, "चाय पीनेको मैं बुरा नहीं समझता। पर तुम लोगोंने गोल गप्पे क्यों खाए?"

"यह सरासर झूठ है," मुन्नूने प्रतिवाद किया।

"गोल गप्पे न सही, दही बड़े-खाए होंगे या फिर चाट-पकौड़ी खाई होगी!" दादाजीने उनके सिर नए दोष मढ़ दिए।

तीनों एकदम 'न' नहीं कर सके। उनके चेहरे उतर गए। राजूने मुन्नूके कानमें कहा, "यह सारा तेरा कसूर है। तुझे कहा था, पत्ते कारपोरेशनवाले कूड़ाघरमें फेंकके आ, तूने फिर घरके पास ही फेंक दिए होंगे।"

"मैं कूड़ाघरमें ही डालकर आया था। मुझे क्या पता था, दादाजी उधरसे भी होकर आएंगे," मुन्नूने लगभग रोते हुए कहा। पिंकीकी तो वह पतली हालत हो गई थी कि उसके मुंहसे बोल ही नहीं निकल रहा था।

"तो तुम लोगोंने चाट-पकौड़ी खाई थी? अपने मनकी चलाओगे, तो तीनों कलको बिस्तर सूंघोगे।" दादाजीने उन्हें डांटना शुरू किया ही था कि घरमें मम्मी और डैडी आ गए। डैडीने पूरी बात सुनी और बच्चोंको समझाया कि शहरमें हैजा फैल रहा है, बाजारकी चीजें खाना ठीक नहीं है।

"ये लोग आजादीका गलत इस्तेमाल करते हैं। आगेसे जब कभी हम बाहर जाएंगे, तो इन्हें कमरेमें बंद करके बाहरसे ताला लगा जाएंगे।" कहते हुए दादाजीने बात खत्म की। वे बच्चोंको इस समय डांटना नहीं चाहते थे। इस समय वे उनसे नाटककी बातें करना चाह रहे थे। डांटनेके बाद क्या पता, बच्चे नाटककी बातें सुनें या नहीं।

रातको सोनेसे पहले राजूने दादाजीसे पूछा, "दादाजी, इसमें कोई शक नहीं कि आप एक महान पुरुष हैं, पर यह तो बताइए कि आपको कैसे मालूम हो गया कि हमने चाय बनाई और चाट-पकौड़ी खाई?"

दादाजी हंसने लगे। हंसी रुकनेपर बोले, "देखो, भई, समय बदल जाता है, युग बदल जाते हैं, राज बदल जाते हैं पर बच्चोंका स्वभाव नहीं बदलता। भगवान रामके जमानेसे लेकर आज इंदिरा गांधीके जमाने तक बच्चोंका स्वभाव वैसा-का वैसा ही रहा है। बड़ोंकी पीठ पीछे हरेक बच्चा हमेशा वे काम करना चाहेगा, जिसमें उसे रोका जाए. . ."

"यदि ऐसा न हो, तो इस संसारमें दादाओंकी जरूरत ही न रह जाए!" मुन्नूने टोका।

दादाजी उसकी बात अनसुनी करते हुए बोले, "एक बार गांवमें मेरे बापूजी भी घरका सारा भार हम दो भाइयोंपर छोड़कर शहर गए थे। पहले तो मैंने और भैयाने रसोईमें जाकर लस्सी बनाई। फिर सोचा, बापू बेलसे खरबूजे तोड़नेको मना करते हैं, आज खाए जाएं। घरके पास ही खेत था। हम गए और कई खरबूजे साफ कर आए। बादमें पता चला कि वह सारी क्यारी ही खराब हो गई थी।"

दादाजी इतना कहकर रुके। फिर बोले, "वैसे ही काम आज तुम लोगोंने किए हैं। मैं जानता था, तुम लोग मेरे कहनेके बावजूद रसोईमें उथल-पुथल करोगे। मैंने हरेक डिब्बेके ढक्कनपर पतले पतले धागे रख दिए थे। चाय और चीनीके डिब्बेके ढक्कनोंसे धागे नीचे गिरे पड़े थे। मतलब तुमने चाय बनाई थी। मुझे पता है, शहरमें हैजा फैलनेके कारण पिछले एक महीनेसे मैंने तुम्हारे गोल गप्पे, दही-बड़े, चाट-पकौड़ीपर रोक लगाकर रखी है। सो तुम्हारे मनको आजादी मिली और वह उधर ही दौड़ गया। बस, यह थी सीधी-सी बात!"

"दादाजी! आप तो जासूसी भी कर लेते हैं!" पिंकीने कहा।

इसपर सब हंसने लगे। ●

९/६७०३ बे.नगर, नई दिल्ली-५

पराग का आगामी दिसंबर अंक

विशेष मजेदार ८ कहानियां

१. मूलों की कमी नहीं : श्रीकृष्ण
२. परीका वरदान : फरहत कमर
३. सेरको सवा सेर : शत्रुघ्नलाल
४. नन्हा महावत बिसु : सावित्रीदेवी वर्मा
५. शेरके बच्चोंकी रखवाली : आशारानी व्होरा
६. दमड़ीमल लोभीलाल : अवध अनुपम
७. बेकारका नुकसान : वीणा वल्लभ
८. बूंगरसा विरुद्ध लालेखां : 'लहर'

साथ में सभी स्थायी स्तंभ
अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करालो

तीसरा टिकट ९० नए पैसेका है (चित्र नं. ३), जिसपर एक लकड़ीका घोड़ा चित्रित है। यह चित्र छोटे बच्चोंकी खेलनेकी प्रवृत्तिकी ओर संकेत करता है। रंग भी अच्छा है, परंतु ९० पैसेका टिकट छोटे बच्चोंको महंगा पड़ता है। अच्छा होता, यदि इसकी कीमत पांच पैसे या दस पैसे रखी गई होती।

सन् १९५८ के डाक टिकटमें एक अस्पतालका दृश्य अंकित किया गया है, जिसमें एक बच्चेके पास नर्सको खड़ा दिखाया गया है (चित्र नं. ४)। टिकटका रंग यदि भड़कदार होता, तो उसका आकर्षण और बढ़ जाता।

सन् १९५९ में प्रकाशित टिकटपर मुस्लिम ढंगकी इमारतमें दो बच्चोंको खड़ा दिखाया गया है। संभवतः यह किसी मस्जिदमें लगने वाले मदरसेका चित्र है (चित्र नं. ५)।

सन् १९६० में प्रकाशित हरे रंगके इस टिकटपर दो गोलोंमें दो चित्र दिए गए हैं (चित्र नं. ६)। पहले गोलेमें दो बच्चोंको कैरम खेलते हुए दिखाया गया है। दूसरे गोलेमें बच्चे ग्लोब-को देखते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। उद्देश्य एवं सौंदर्यकी दृष्टिसे यह टिकट सबसे अच्छा है।

हमारा देश निर्माण पथपर बढ़ रहा है। इस निर्माण-कार्यके लिए देशमें इंजीनियरों एवं मैकेनिकोंकी अत्यधिक आवश्यकता है। सन् १९६१ में प्रकाशित टिकटपर एक किशोर विद्यार्थीको इंजीनियरिंग वर्कशापमें कार्य-मग्न दिखाया गया है (चित्र नं. ७)। देशकी आवश्यकताको देखते हुए डाक-तार विभाग ने यह चित्र प्रकाशित कर कई विद्यार्थियोंका ध्यान इंजीनियरिंगकी ओर खींचा है।

आजके बच्चोंके कंधोंपर ही तो भविष्यमें देशकी स्वतंत्रताकी रक्षाका भार है, अतः १९६२ में प्रकाशित टिकटमें एक बलिष्ठ मर्दानी भुजा एक सुकोमल हाथमें तिरंगा थमाते हुए दिखाई गई है (चित्र नं. ८)। इस चित्रको देखकर अनायास ही 'अब तुम्हारे हवाले वतन, साथियो' वाली पंक्तिकी याद आ जाती है।

अंतरराष्ट्रीय बाल हितकारी संघ, जिनेवा-के प्रस्तावपर, भारतीय बाल कल्याण समितिने एक सुझाव रखा था कि विद्यालयोंमें विद्यार्थियों-को सरकारकी ओरसे मध्यावकाशके समय अल्पाहार दिया जाना चाहिए। इसी [illegible] १९६३ में प्रकाशित टिकटमें एक अध्[illegible] बच्चोंको दूधके गिलास देती हुई दिखाई ग[illegible] यह टिकट हल्के भूरे रंगका है (चित्र नं ९)।

सन् १९६४ के वर्षमें बच्चोंके चाचा नेहरू हमें सदा सदाके लिए छोड़कर चले गए। उनकी स्मृतिमें उनके ७५ वें जन्म-दिवसपर एक डाक टिकट निकाला गया। आसमानी नीले रंगके इस टिकटके मध्य एक रुपये वाले 'नेहरू सिक्के' का चित्र है, जिस पर अंग्रेजीमें 'जवाहरलाल नेहरू' तथा उनका जीवन-काल १८८९-१९६४ लिखा है। टिकटके ऊपर हिन्दीमें 'चाचा नेहरू' छपा है। तथा उसीके साथ, बाएं कोनेपर चाचा नेहरू-के प्रतीक —'गुलाब' का रेखा चित्र है (चित्र नं १०)। परंतु यह सब होते हुए भी यह टिकट आकर्षक नहीं बन पाया। हां, इसके साथके 'फर्स्ट डे कवर' परका चित्र, जिसमें चाचा नेहरू एक बालिकाके गलेमें पुष्पमाला डालते हुए दिखाए गए हैं, निश्चय ही टिकटके चित्रसे सुंदर है (देखो शीर्षकके साथ दिया हुआ चित्र)।

सन् १९६५ के बाल-दिनपर कोई डाक टिकट नहीं निकाला गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्वके अन्य कई महापुरुष विश्व-शांतिके प्रयत्नोंमें लगे हैं। कल यही कार्य आजके बच्चोंको करना होगा। अतः यदि अभीसे बच्चों के हृदयोंमें युद्धके विरुद्ध घृणाके भाव भर दिए जाएं और विश्व-शांति-का महत्व समझा दिया जाए, तो कोई वजह नहीं कि कलकी पीढ़ी सम्पूर्ण संसारको प्रेम एवं शांतिकी एक लड़ीमें न पिरो सके। इसी लिए बच्चोंके मनमें विश्व-शांतिकी भावना पैदा करनेके लिए १९६६ में बच्चे और 'विश्व-शांति' शीर्षकसे मजेण्टा कलरमें एक डाक टिकट निकाला गया, जो बाल-दिनके पहले दशकका अंतिम टिकट है (चित्र नं ११)।

इस प्रकार डाक-तार विभागने इन दस वर्षोंमें ग्यारह टिकट प्रकाशित कर बच्चों-के लिए विशेष रूपसे प्रशंसनीय कार्य किया है। आशा है कि आगामी वर्षोंमें भी 'बाल-दिन' पर इसी प्रकारके टिकटोंके उपहार डाक-तार विभागकी ओरसे बच्चोंको मिलते रहेंगे।

७५ / ३ मुलुंड कालोनी, बम्बई–८२

चांद की सैर (पृष्ठ ३९ से आगे)

फिर तो नित्य हरकू और दम्मो ठाठसे मोटरमें घूमने निकलते। रेशमी साड़ी और गहनोंमें सजी दम्मो, हाथमें बड़ा-सा बटुआ, गोदीमें झबरा कुत्ता और बगलमें हरकू—नई जवाहर वास्कट, तिरछी टोपी और बगुलेकी पांख-सी धोती; जिधरसे जाते लोग झुक झुककर प्रणाम करते।

कुछ दिनों तक दम्मोकी बड़बड़ाहट एकदम बंद हो गई। हरकूको लगा कि दम्मो अब कभी कुछ नहीं मांगेगी, चलो छुट्टी हुई। पर हरकू क्या जानता था कि औरतको कभी संतोष हो ही नहीं सकता।

एक दिन दम्मोने आकाशपर उड़ता एक स्पूतनिक देख लिया। "कैसा सरपट भागा जावै है ये तारा!" वह बड़बड़ा रही थी कि पड़ोसी बूढ़े टेलर मास्टरने कहा—"बावली, तारा थोड़े ही है, यह तो स्पूतनिक है स्पूतनिक। रूसी और अमरीकी तो अब रॉकेटपर चांदकी सैर करें है—"

बस फिर क्या था, दम्मो मन ही मन मुस्कराई—वह कल ही दिखा देगी इस खूसटको। ऐसी सैर करेगी कि क्या इन रूसी-अमरीकियोंने करी होगी। कैसा मजा आएगा चांदकी नगरीमें—न बिजलीका झंझट न बत्तीका, न मुहल्ले-टोलेकी चें चें-पें पें। हरकूका खोमचा भी खूब बिकेगा। यहां तो जिसे देखो वही खोमचा लगा रहा है, वहां अकेले हरकूका ही खोमचा होगा।

उसी दिन हरकूको दम्मोने फिर आधी रातको खदेड़ दिया। हरकूने लाख समझाया—"इतना कुछ दे दिया बाबाजीने, फिर भी तेरा दिल नहीं भरा? साड़ी, गहने, मकान, मोटर, कुत्ता, बटुआ—"

"अच्छा बहुत जबान चलाना सीख गया है खोमचिए! जाता है सीधे मुंह कि मारूं झाड़ू?"

पर अब, हरकू भी सफेद टोपी लगा और मोटरमें बैठकर सयाना हो गया था।

वह पीपल तले आंखें मूंद, हाथ जोड़ खड़ा हो गया। अमावस्या थी इसीसे बाबाजी आज पीपल तले, तीन-चार प्रेतोंको न्यौत, गांजेका दम लगा रहे थे।

"क्या है, रे हरकूवे? आज क्या मांगती है तेरी घरवाली?" फिर हंसकर पूछा, "हाथी-घोड़ा या सिंहासन?"

"महाराज!" हरकू बोला, "मेरी तो जान ही लेकर मानेगी वह चुड़ैल! आज कहती है कि चांदकी सैर करेगी। पर, माई-बाप, इस बार आप उसे अकेली ही भेज दें और मेरी छुट्टी करें!"

चारों परेत बिना गालोंकी बत्तीसी दिखा ठिसककर हंसने लगे। "बड़ा बदमास है रे तू, घरवालीसे छुट्टी चाहता है!" चारों बोले—"हम भी तो अपनी घरवालियोंसे छुट्टी पाने इस पीपलपर पड़े हैं। उन चुड़ैलोंसे तो पीपल अच्छा।"

"आ मांग!" बड़े बाबा बोले, "खा-पी और मौज कर। क्यों रे, अपने लिए नहीं मांगेगा कुछ?" उस दिन बाबाके गांजेकी चिलम खूब बढ़िया सजी थी और उनका चोला बड़ा प्रसन्न था।

"महाराज!" गद्गद् स्वरमें हरकू बोला: "मुझे मेरी झोंपड़ी लौटा दीजिए, पक्के मकानमें मुझे दमघुटन होती है, अन्नदाता!"

"अच्छा अच्छा!" बाबा बोले, "ले लगा एक दम—जय शंकर, कांटा लगे न कंकर, दुश्मनको तंग कर!"

एक दम लगाकर हरकू तो न जाने किस लोकमें पहुंच गया। सुबह नींद टूटी, तो पीपल तले पड़ा था। ठंडी ठंडी पुरवैयामें फिर आंखें झपकने लगीं। पूरी ताकत लगाकर वह उठा। न कहीं बाबा थे न कहीं चिलम!

वह सरपट घरकी ओर भागा। आज दम्मो निश्चय ही झाड़ूसे कमर तोड़कर रख देगी।

अचानक वह ठिठककर खड़ा रह गया। सामने उसकी प्यारी झोंपड़ी खड़ी थी—वही फटी चटाइयोंकी दीवारें, फूसका छप्पर, लिपा-पुता चूल्हा, चूल्हेपर काली हांडी, हांडीमें खदबदाते चार सेर छोले और सवा दो सेर आलू। पर दम्मो! दम्मो कहां गई? "दम्मो दम्मो!" उसने पुकारा।

पर न वहां दम्मो थी न उसकी झाड़ू। हरकूको गए जब रात आधीसे भी पहर ज्यादा बीत गई, तो वह भुनभुनाकर झाड़ू लेकर दरवाजेपर खड़ी हो गई। आए तो मुंडीकाटा, कलमुंहा, दे झाड़ू पर झाड़ू, लाश बिछा कर रख देगी।

पर तब ही कोई उसे झाड़ू सहित ऊपर खींचने लगा, ठीक जैसे वह रसरियासे लोटा खींचती थी कुएंसे! पेड़, नदी, पहाड़, रेलकी पटरी सब छोड़ती वह बादलोंके घेरोंके बीच खिंची जा रही थी। ओह तो ये हैं रॉकेट... कैसा मजा आ रहा था! कभी वह रॉकेटकी एक खिड़कीसे झांकती कभी दूसरीसे। अब उसका शरीर, कागजके फूल-सा हल्का बन ऊपर उठने लगा था और वह गोल गोल, रॉकेटके भीतर तैरने-सी लगी थी। पहले तो वह जोर जोरसे हंसने लगी। यह भी कैसा मजाक कर रहे थे बाबाजी! कितनी ही बार उसने कोशिश की कि दोनों पैर जमीनपर टिका ले, पर हाथ-पैर फिर चीलके पर-से फैल जाते, पीछे पीछे उसकी झाड़ू भी घूमती जा रही थी। बीच बीचमें वह चटाचट चपेटें भी लगाती जाती, तो उसके आंसू निकल आते। क्या हरकूकी पीठपर मारे गए झाड़ू-चपेटोंका बदला ले रहे थे बाबाजी?

तबसे आज तक, चांदकी न जाने कितनी परिक्रमा कर चुकी है दम्मो—"ओ बाबाजी, मुझे माफ करो अब मुझे उतार दो!" वह घिघियाती, हाथ जोड़ गोल गोल घूमती जाती है, पर न तो वहां पीपलका पेड़ है और न है बाबा। वहां तो बस नीला नीला आकाश है और है चमकता चंदा, थालसे चांदकी चारों ओर गोल घूमता दम्मोका रॉकेट है और रॉकेटमें घूमती दम्मो, दम्मोके पीछे चटाचट चपेटें मारती झाड़ू। लगता है हरकूकी पीठपर पड़ी मारका पूरा पूरा बदला चुकाकर ही मानेगी वह झाड़ू! ●

प्रायरी लॉज, नैनीताल।

kissekahani.com

दीप-शिखा (पृष्ठ ३३ से आगे)

लगा। वह घबड़ा गई और मांके नीचे खाटपर पाएसे दुबककर बैठ गई।

जो चावल मांके निकट गिरते उन्हें चुगनेके लिए अन्य चिड़ियां तो सोचती रह जातीं, परंतु दीपको इनसानसे भय नहीं लगता था। वह आगे बढ़कर उन्हें हजम कर जाता। अन्य चिड़ियोंने यह देखकर उसपर हमला बोल दिया।

जब चिड़ियोंके लड़नेकी भनक मांके कानमें पड़ी, तो वह दीपके छोटे कद और अलग चाल-ढालको पहचान गई। उन्होंने दीपको उठाकर शिखाके पास बैठा दिया। अगर मां तुरंत न उठतीं, तो अन्य चिड़ियां दीपको घायल कर देतीं।

शिखाने हांफते हुए दीपके मुंहमें अपनी चोंच डाली मानो अपनी भाषामें कोई समझौता किया हो और फिर दोनों फुदकते हुए वहां आ गए जहां चावल गिर रहे थे।

दो चिड़ियोंको इकट्ठा देख अन्य चिड़ियोंको उनसे जूझनेका साहस फिर नहीं हुआ। कुछ ही देरमें सारी चिड़ियां उनसे घुल-मिल गईं।

उसके बाद दीप और शिखा अपने डिब्बेमें नहीं लौटे। एक-दो दिन तो वे मांकी पहचानमें आते रहे, परंतु फिर उन्हें अन्य चिड़ियोंमें पहचानना कठिन हो गया।

जब नोनी, पोली और पिताजी बाहरसे घर लौटे, तो पोलीने मांसे पूछा, "मां तुमने हमारे दीप-शिखा देते हैं?"

मां द्वारा उत्तर न दिए जानेपर वह नोनी-की मेजके निकट गई। मांको पुकारते हुए उसने कहा, "मां वो इछ ततोरीमें दाना थाते थे। इछ दिब्बेमें सोया तरते थे। और, मां, वो यहां ऊपर छे आए थे . . ." कहते कहते पोली आंगनमें आकर रोशनदानकी ओर संकेत करने लगी।

"मुझे क्या पता तुम्हारे दीप-शिखाका!" मां बड़ी रुखाईसे बोलीं। परंतु पोलीकी भोली-भाली बातें उनके हृदयको छू गई थीं। उन्हें चिड़ियाके बच्चोंकी याद हो आई। उनकी आंखें बरबस नम हो गईं। पोलीसे यह सब छिपानेके लिए उन्होंने अपने मुंहको आंचलसे ढांपा और उठकर रसोइघरमें चली गईं। ●

सेंट्रल ट्रेडिंग कं०,
४४८४ दाऊद बाजार, कलाश मार्केट, दिल्ली–६

चतुर बंदर (पृष्ठ ५७ से आगे)

हुए सियारपर दनादन लाठियां बरसाना शुरू कीं। सियार चीखता-चिल्लाता अध-खुले दरवाजेसे भागा। बाहर लोगोंने भी उसकी अच्छी मरम्मत की। उसे घेरकर बांध लिया गया।

बनियेने सियारको ले जाकर घरमें बांध दिया और अपनी पत्नी तथा बेटीसे कह दिया, "मैं शहर जा रहा हूं। वहां सरकसवालोंसे इसे बेचनेकी बात करूंगा। इसे छतपर बंधे रहने देना। सिवाय पानीके कुछ न देना।"

सियार अपनी किस्मतपर रोता रह गया। दो दिन तक उसे कुछ भी नहीं मिला। भूखके मारे आंतें कुलबुलाने लगीं, तो बंदरकी याद आई।

इधर बंदरने दो दिन तक सियारको वापस न आते देखा, तो उसका माथा ठनक गया। जरूर बच्चू गांव गए होंगे और मुसीबतमें फंस गए होंगे। वह खोजने निकला। सही ठिकानेपर आकर देखा, सियार बंधा हुआ है। दोनों छूटनेकी तरकीब सोचने लगे। सियार बोला, "पहले कुछ खाऊंगा, तभी जा सकूंगा। एक तो मारसे अधमरा हो गया हूं, ऊपरसे भूखने मार डाला है।"

बंदरने छतसे झांककर देखा। सब सो रहे थे। वह चुपकेसे रसोईघरमें उतर आया। छींकेपर कटोरदानमें लड्डू रखे थे। पूरा कटोरदान ही उठा लाया। दो लड्डू खुद खा, बाकी सियारको देकर बोला, "मैं रस्सी काटनेके लिए कोई तेज कटारी लाता हूं, तब तक तुम खाकर मजबूत हो जाओ।"

बंदरके जानेके दो मिनिट बाद ही बनिया शहरसे लौटा। घर पहुंचते ही उसने सबसे पहला काम सियारको देखनेका किया। वह दो सौ पचास रुपयेमें सौदा करके आया था सरकसवालोंसे। उसने ऊपर आकर देखा कि सियार मजेसे लड्डू गपक रहा है, तो उसे बड़ा गुस्सा आया।

वह सियारसे भी ज्यादा घरवालोंपर क्रोधित था। उन्होंने लड्डू क्यों दिए? उसने बात भी नहीं की, बस पत्नीको मारना शुरू कर दिया। इस बीच बंदरने झटसे छुरी लाकर रस्सी काट दी। अब सियारने नीचेका नजारा देखकर व्यंगसे कहा, "नीचे होवे धमर कुटाई, ऊपर नाचें गीदड़ भाई!"

बनिया जब गुस्सेमें उबलता ऊपर पहुंचा तब तक बंदर और सियार रफूचक्कर हो चुके थे। ●

४४ अमर महल, घाटकोपर रोड, चेम्बूर, बम्बई–७१

kissekahani.com